आज़ादी का अमृत महोत्सव

जनेप प्राधिकरण
JNPA

सागरमाला
पत्तन आधारित समृद्धि

अभिव्यक्ति

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण की गृह पत्रिका

अंक - 37

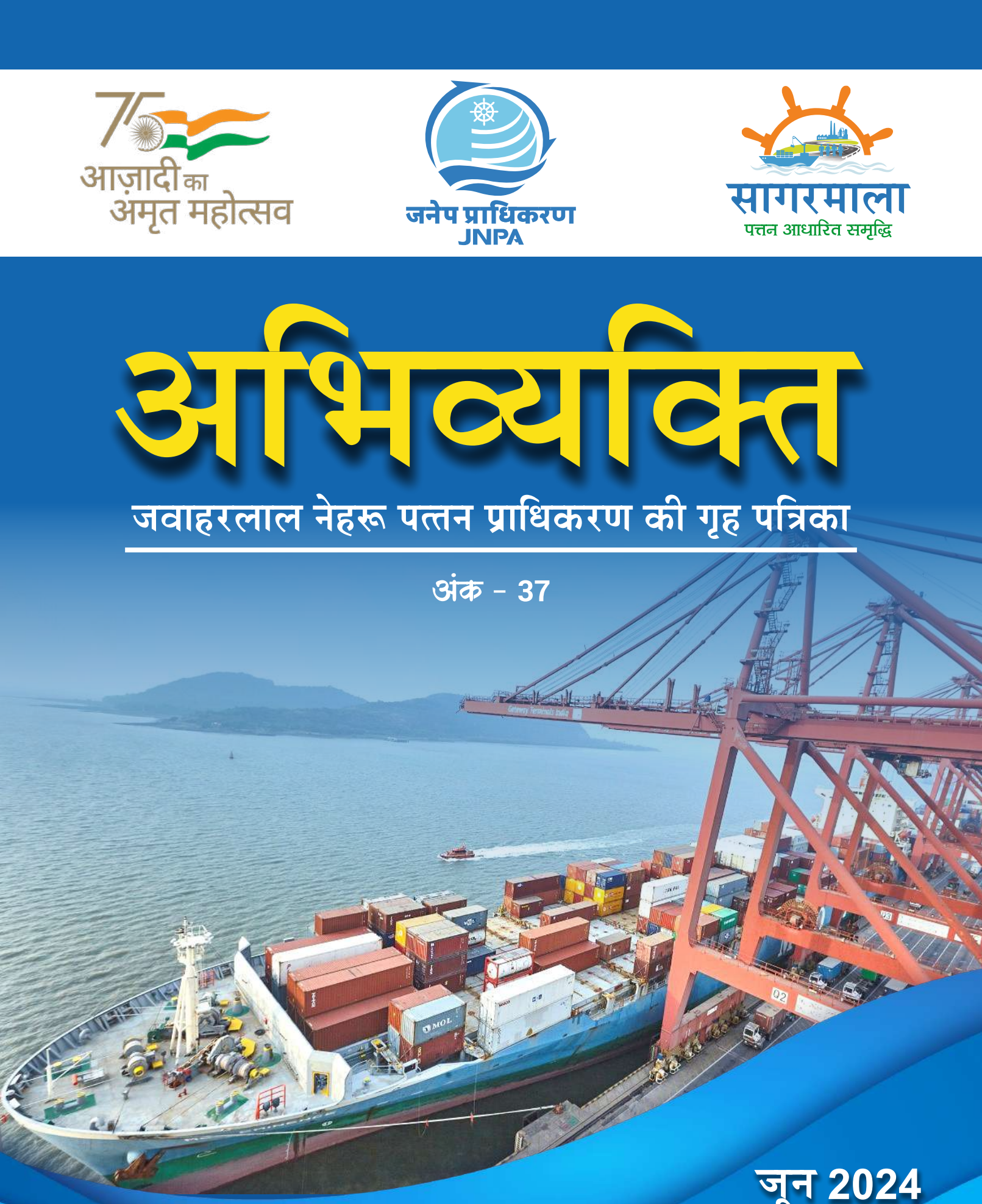

जून 2024

हमारे पत्तन में हिन्दी प्रशिक्षण की गतिविधियाँ

कंठस्थ 2.0 आधारित अनुवाद पर कार्यशाला का आयोजन एवम् अभ्यास सत्र

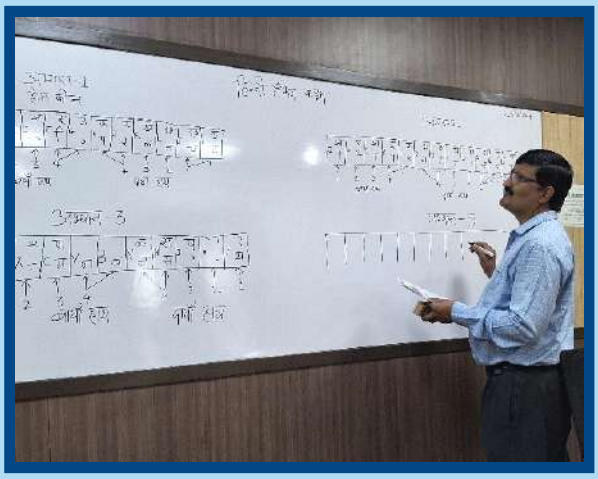

हिन्दी टंकण पर कार्यशाला का आयोजन एवम् अभ्यास सत्र

प्रशासनिक पत्राचार पर कार्यशाला का आयोजन एवम् अभ्यास सत्र

विषय सूची

क्रम. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1	अध्यक्ष महोदय का संदेश	02
2	संपादकीय	03
3	जनेप प्राधिकरण द्वारा कारपोरेट सामाजिक दायित्वों का निर्वहन	04
4	जनेप प्राधिकरण में झीलों का कायाकल्प और सौन्दर्यीकरण	08
5	वाढवण ग्रीनफील्ड पत्तन का विकास	12
6	मिलेट्स - श्री अन्न (एक खाद्य वरदान)	17
7	जे. एन. पी. ए. एंटवर्प पोर्ट ट्रेनिंग एंड कंसल्टेन्सी फाउन्डेशन	21
8	कविता : समझ के परे	24
9	मानव जीवन सफल बनाऐंगे	25
10	कविता : जिन्दगी	27
11	जनेप प्राधिकरण में हरित ऊर्जा का प्रयोग	28
12	कविता : मैं समय हूँ	31
13	सांस्कृतिक कार्यक्रम	32
14	कविता : चले आओ न तुम	35
15	शब्दकोश	36
16	कविता : जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण	38
17	भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष	39

संरक्षक

श्री उन्मेष शरद वाघ, भा.रा.से.
अध्यक्ष

मुख्य संपादक

विनय बहादुर मल्ल
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

परितोष निगम
संजय राजाराम पाटिल
मनोहर जनार्दन म्हात्रे

रचनाकारों से अनुरोध

अभिव्यक्ति पत्रिका के लिए आप की रचनाऐं निम्नलिखित पते पर आमंत्रित हैं -

राजभाषा अनुभाग, प्रशासन विभाग,
जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण,
शेवा, नवी मुंबई - 400707
E mail : hindicell@jnport.gov.in

अस्वीकरण : अभिव्यक्ति में प्रकाशित सामग्री में लेखकों ने अपने व्यक्तिगत विचार प्रस्तुत किए हैं । जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है । व्यक्तिगत लेखों और कविताओं के रचनाकार अपने कॉपीराइट के लिए स्वयं जिम्मेदार रहेंगे । अभिव्यक्ति में प्रकाशित सामग्री का किसी भी अन्य रूप में प्रयोग करने से पूर्व संपादक मंडल से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है ।

– संपादक

अध्यक्ष महोदय का संदेश

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण की गृह-पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का 37 वां अंक आपको सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है ।

इस पत्रिका के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों में कार्यालयीन कामकाज की निपुणता के साथ-साथ सृजनात्मक प्रतिभाएं भी प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं । सृजन बिना संवेदनशीलता के संभव नही हैं । संवेदनशीलता मनुष्य के सबसे प्रमुख गुणों में से एक है । यही हमें देश व समाज के प्रति समर्पित होना सिखाती है ।

गृह-पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को निश्चित रूप से प्रोत्साहित करेगा, जिससे हम राजभाषा से जुड़े लक्ष्यों को पूर्ण करने की दिशा में तेजी से अग्रसर हो सकेंगे । यह राजभाषा नीति के अनुपालन की दिशा में तो एक अच्छा प्रयास है ही । इसके अलावा, गृह-पत्रिका के प्रकाशन से जनेप प्राधिकरण की गतिविधियाँ और उपलब्धियाँ भी सरल और सहज रूप में आमजन तक पहुँच सकेंगी ।

मुझे विश्वास है कि गृह-पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों की अभिव्यक्ति की क्षमता में और निखार आएगा जो उनके व्यक्तित्व के साथ-साथ कार्यालय के कार्यों को और अच्छे ढंग से करने में मददगार होगा ।

'अभिव्यक्ति' के प्रकाशन के लिए राजभाषा से जुड़े कार्मिक विशेष बधाई के पात्र हैं, जिनके प्रयासों के बिना गृह पत्रिका का इतने सुंदर रूप में प्रकाशन संभव नहीं है ।

गृह-पत्रिका के सभी पाठकों, लेखकों तथा संपादक - मंडल को मेरी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाऐं ।

उन्मेष शरद वाघ, भा.रा.से.
अध्यक्ष
जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण

सम्पादकीय

हमारी गृहपत्रिका 'अभिव्यक्ति' के 36वें अंक के प्रकाशन ने, हमारे पत्तन के सभी हिन्दी प्रेमियों को उत्साहित किया तथा अन्य पाठकों को भी रचनायें लिखने के लिए प्रेरित किया । 'अभिव्यक्ति' के 37वें अंक को प्रकाशित करने में, मुझे यह देखकर और अधिक हर्ष की अनुभूति होती है कि प्रत्येक वर्ग के कार्मिक से लेकर उच्चाधिकारियों तक ने अपनी रचनाओं के माध्यम से, हमारी पत्रिका के संकलन में अमूल्य योगदान दिया । उच्चाधिकारी रचनाकारों ने अपने-अपने कार्य क्षेत्र से सम्बन्धित आलेखों से पत्तन की गतिविधियों तथा परियोजनाओं से सम्बन्धित आवश्यक तथ्य, जन मानस की भाषा में प्रस्तुत कर उल्लेखनीय योगदान दिया है और आप अन्य रचनाकारों के लिए भी प्रेरणा स्त्रोत बने ।

हमारा पत्तन 'ख' क्षेत्र (हिन्दीतर भाषायी क्षेत्र) में स्थित है, फिर भी पत्तन के कार्मिकों एवं अधिकारियों की ज्ञानवर्धक एवं मनोहर रचनायें, उनका हिन्दी के प्रति अगाढ़ प्रेम दर्शाता है । प्रत्येक मनुष्य की सृजनात्मक क्षमता परस्पर भिन्न होती है । उत्कृष्ट रचनाओं के सृजन का ध्येय रखते हुए, हमें सतत् प्रयास करते रहना चाहिए । मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होगी । पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए आप सभी के सुझाव सादर आमंत्रित हैं । अध्यक्ष महोदय, महाप्रंधक (प्रशासन) एवं सचिव, संपादक मंडल के समस्त सदस्यों तथा सभी रचनाकारों के प्रति, मैं अपना हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ ।

धन्यवाद,
जय हिन्द.....

-विनय बहादुर मल्ल
प्रबंधक (राजभाषा)

जनेप प्राधिकरण द्वारा कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन

– श्रीमती मनिषा जाधव
महा प्रबंधक (प्रशासन) एवं सचिव

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण, नवी मुम्बई, द्वारा अनेक सी एस आर परियोजनाऐं चलायी जाती हैं । पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय द्वारा इस संबन्ध में अनेक सी एस आर दिशा निर्देश दिये जाते हैं, जिनका पूरी तरह से अनुसरण किया जाता है । पत्तन,पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी महापत्तनों के लिए कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व पर संशोधित दिशा–निर्देश–2023 के अनुसार, जेएनपीए को सीएसआर गतिविधियों के लिए शुद्ध लाभ का 0.5% से 2% तक का प्रावधान करना है । तदनुसार जेएनपीए के बोर्ड ने सीएसआर गतिविधियों के लिए शुद्ध लाभ का 1% प्रावधान किया है । जेएनपीए ने इसके लिए वर्ष 2023–24 में10.97 करोड़ रुपये आबंटित किए हैं । जेएनपीए विशेष एजेंसियों के माध्यम से सीएसआर गतिविधियों को लागू करता है । कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व दिशानिर्देश, अपने हितधारकों और समाज के हितों को पहचानते हुए आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ तरीके से पत्तन संचालित करने के लिए हमारे पत्तन की प्रतिबद्धता को दर्शाता है । हमारे पत्तन की सी. एस. आर. गतिविधियों द्वारा यह प्रतिबद्धता वैधानिक रूप से अनिवार्य आवश्यकताओं से भी अधिक प्रदर्शित होती है । वर्ष 2023–24 में, सीएसआर के तहत वित्तीय सहायता निम्नलिखित 13 कार्यान्वयन एजेंसियों को प्रदान की गई थी ।

सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास से जुड़े अनेकों पहलू ऐसे हैं जहाँ सरकारी प्रयास अब तक सकारात्मक वांछित परिणाम नहीं दिखा पाये हैं । इसलिए सी. एस. आर. गतिविधियों को सुनियोजित तरीके से विशेषज्ञ गैर सरकारी संस्थाओं के माध्यम से संचालित करना आवश्यक है । जनेप प्राधिकरण द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास, पेयजल, पर्यावरण के संरक्षण, गाँवों में बुनियादी ढाँचा प्रदान करने आदि पर सी. एस. आर. गतिविधियों को चलाने के लिए विभिन्न कार्यान्वयन एजेंसियों को वित्तीय सहायता प्रदान की गई है । ये गतिविधियाँ लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में मदद कर रही हैं । जनेप प्राधिकरण की सी. एस. आर. गतिविधियाँ हमारे पत्तन के आस–पास के क्षेत्रों में प्रमुखता से संचालित हो रही हैं । इसके अलावा, महाराष्ट्र के दूर–दराज के क्षेत्रों में भी जनेप प्राधिकरण के इस प्रकार के अनेकों कल्याणकारी कदम पहुँचे हैं । हमारे पत्तन ने सी. एस. आर. गतिविधियों के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र के सकारात्मक निर्माण में प्रशंसनीय योगदान दिया है । इसी कारण से, हमारे पत्तन के आस–पास के क्षेत्रों में किसी भी विकास परियोजना के लिए, हमारे पत्तन से यह अपेक्षा की जाती है कि आवश्यक सहायता प्रदान करे । मुझे यह बताते हुए अपार प्रसन्नता होती है कि हमने सरकारी लक्ष्यों से भी आगे बढ़कर सी. एस. आर. गतिविधियों को कार्यान्वित किया है ।

फलों, दालों और अनाजों के संग्रह, प्रसंस्करण और कृषि–आधारित उत्पादों के विपणन पर कौशल और क्षमताओं में सुधार करने के लिए महिला किसानों को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना, गाँवों में अल्पसंख्यक, अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े लोगों और आर्थिक रूप से कमजोर लोगों पर ध्यान केंद्रित करते हुए भी सी. एस. आर. गतिविधियों की योजना बनाई जाती है । जनेप प्राधिकरण द्वारा संचालित सी. एस. आर. गतिविधियों की सूची बहुत लम्बी है । उनमें से कुछ ही गतिविधियों का सचित्र उल्लेख यहाँ किया जा रहा है ।

उरण में नवीन शेवा, करंजा और मोठिजुई के स्कूलों में बच्चों के लिए सहायता कक्षाऐं । यह परियोजना लाइट ऑफ लाइफ ट्रस्ट द्वारा कार्यान्वित की जा रही है ।

किसी भी राष्ट्र एवं समाज के विकास में, वहाँ के वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों की सृजनात्मक एवं सकारात्मक भूमिका का विशेष महत्व होता है । हमारा देश एक विकासशील देश है जहाँ सी. एस. आर. गतिविधियों द्वारा देश की प्रगति में चार चाँद लग सकते हैं । उद्योग–धन्धों और वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों की सर्व व्यापकता के कारण ही, सी. एस. आर. गतिविधियों का देश के प्रत्येक दूरस्थ इलाके तक पहुँचना सम्भव है । इन विकास गतिविधियों के कारण, आस–पास के लोगों में औद्योगिक विकास के लिए सकारात्मक मानसिकता का भी विकास होता है ।

समुचित शिक्षा व्यवस्था देश के उज्जवल भविष्य के लिए नितान्त आवश्यक है । यदि हम अपने प्रत्येक विद्यार्थी को आधुनिक शिक्षा दे सकते हैं, तो आशा के ये दीपक न केवल अपने परिवारों की सुख, समृद्धि एवं आर्थिक सम्पन्नता का कारण बनेंगे, बल्कि हमारे देश का बहुमुखी विकास भी सुनिश्चित करेंगे ।

पार्किंग प्लाजा, उरण में जनेप प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री उन्मेष शरद वाघ द्वारा ट्रक ड्राइवरों के लिए स्वास्थ्य जाँच और चिकित्सीय सहायता का उद्घाटन ।

एक पत्तन के निर्बाध संचालन में, वहाँ के ट्रक चालकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है । उनके बेहतर स्वास्थ्य को सुनिश्चित करते हुए, उन्हें हमारे पत्तन द्वारा चिकित्सीय सहायता भी उपलब्ध करायी जाती है ।

हमारे पत्तन द्वारा न केवल आवश्यक निधि का आबंटन किया जाता है, बल्कि आबंटित निधि के समुचित व्यय की निगरानी भी की जाती है । नागपुर में धर्मार्थ अस्पताल में नेत्र संबंधी चिकित्सा उपकरणों की खरीद परियोजना की निगरानी करने के लिए वहाँ का दौरा किया गया । यह परियोजना डॉ. दलवी मेमोरियल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, नागपुर द्वारा कार्यान्वित की जा रही है ।

शुद्ध पेय जल की उपलब्धता सुनिश्चित कराना ऐतिहासिक काल से ही हमारे देश में एक पुण्य का कार्य माना जाता रहा है । उन्हीं परम्पराओं को आगे बढ़ाते हुए, हमारे पत्तन द्वारा भी यह प्रयास किया गया कि आस–पास के गाँवों में शुद्ध पेय जल वितरण की आधुनिक व्यवस्था हो । इसलिए 4 गांवों, नवीन शेवा, फुंडे, जसखार और हनुमान कोलीवाडा, उरण में जल शोधक (वाटर एटीएम) की स्थापना की गई । यह परियोजना एल ए एच एस प्रतिष्ठान, ठाणे द्वारा कार्यान्वित की जा रही है ।

महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल, श्री रमेश बैस की उपस्थिति में "कंप्यूटर लैब की स्थापना, महाराष्ट्र के 38 एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों के शिक्षकों के लिए टैबलेट का प्रावधान, 10वीं और 12वीं कक्षा के छात्रों के लिए साइकोमेट्रिक टेस्ट करियर काउंसलिंग, मेंटरशिप कार्यक्रम और शिक्षक प्रशिक्षण" परियोजना के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए । यह परियोजना CDROME एजुकेशन सोसायटी द्वारा कार्यान्वित की जा रही है । इस योजना की घोषणा पत्तन की 35वीं वर्षगाँठ समारोह पर की गई थी । निश्चित रूप से, यह योजना अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के लिए आधुनिक शिक्षा सुनिश्चित करने में मील का पत्थर साबित होगी ।

हमारे पत्तन में कार्यरत श्री पी. एस. मीणा के सुपुत्र श्री योगेश पी. मीणा ने यू. पी. एस. सी द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज परीक्षा (भारतीय प्रशासनिक सेवा आई ए एस) 2023 में 66वां स्थान प्राप्त किया । जनेप प्राधिकरण (JNPA) के अध्यक्ष श्री उन्मेष शरद वाघ ने उन्हें सम्मानित किया । इस शुभ अवसर पर, महाप्रबंधक प्रशासन एवं सचिव श्रीमती मनीषा जाधव ने भी अपनी शुभकामनाऐं दी । यह हमारे पत्तन के लिये अपार हर्ष और गर्व का विषय है । हमारी गृह पत्रिका अभिव्यक्ति की ओर से भी उन्हें हार्दिक बधाइयाँ एवं शुभकामनाऐं ।

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण में झीलों का कायाकल्प और सौंदर्यीकरण

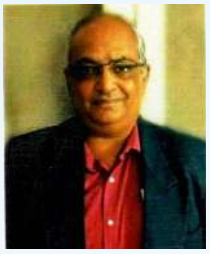

डॉ. जी. वैद्यनाथन
मुख्य महाप्रबंधक (पत्तन योजना एवं विकास विभाग)
जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण (जेएनपीए) महाराष्ट्र में नवी मुम्बई (रायगड जिले) में, भारत के पश्चिमी तट पर स्थित है। जेएनपीए के गठन की संकल्पना 1970 के दशक के अंत में मुंबई पत्तन की भीड़भाड़ को ध्यान में रखते हुए की गई थी। विकास के स्थायी पहलुओं के प्रति प्रतिबद्धता को देखते हुए, पत्तन ने मई 1989 में अपने गठन के बाद से पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए पर्याप्त उपाय किए हैं।

जेएनपीए सतत विकास के लिए प्रतिबद्ध है और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए पर्याप्त उपाय किए जा रहे हैं। जेएनपीए के पास उपलब्ध कुल भूमि लगभग 3400 हेक्टेयर है, इसमें से पत्तन का लगभग हेक्टेयर क्षेत्र (34%) मैंग्रोव सहित हरित आवरण के अंतर्गत है। पत्तन के पारिस्थितिकी तंत्र में विविध वनस्पतियाँ और जीव -जंतु शामिल हैं। पत्तन स्तर पर, वैश्विक जलवायु परिवर्तन की समस्या का समाधान करने के लिए, पत्तन ने "ग्रीन पत्तन स्टेटस" हासिल करने की पहल की है। पत्तन को परिचालन दक्षता के लिए कई पुरस्कारों के अलावा अपने निरंतर हरित प्रयासों के लिए भी पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय की हरित पत्तन पहल के अनुसार, जेएनपीए ने अनेकों पर्यावरणीय पहल की हैं, जैसे पत्तन संपदा में सीवेज उपचार संयंत्र की स्थापना, एलईडी लैंप देना, तेल रिसाव प्रतिक्रिया (ओएसआर) सुविधाएं, नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन के लिए परियोजनाऐं स्थापित करना, आईआईटी मद्रास के माध्यम से पर्यावरण निगरानी, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, स्थिरता रिपोर्टिंग, पत्तन क्षेत्र के अंदर ई-वाहनों का उपयोग, ऊर्जा बचाने के लिए आईओई सेंसर के माध्यम से स्मार्ट प्रकाश व्यवस्था की शुरुआत, जेएनपीए में शेवा मंदिर और शेवा तलहटी के पास जलाशयों का कायाकल्प, ग्रीन बिल्डिंग - पत्तन फैसिलिटेशन सेंटर और बिजनेस फैसिलिटेशन सेंटर, सड़कों का कंक्रीटीकरण, ग्रीन जोन के व्यापक विस्तार का रखरखाव, ट्रैक्टर-ट्रेलरों के इंटर-टर्मिनल ट्रांसफर (आईटीटी) की शुरुआत की गई हैं।

पत्तन , पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के केंद्रीय मंत्री , श्री सर्बानंद सोनोवाल ने जवाहरलाल नेहरू पत्तन में तीन मीठे पानी की झीलों का 22 अगस्त 2024 को उद्घाटन किया। क्षेत्र के पारिस्थितिक संतुलन को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किए गए तीन प्रमुख जलाशयों का महत्वपूर्ण योगदान होगा । इनमें प्रशासन भवन फ़ुटहिल झील और सीपीपी झील शामिल हैं, दोनों रणनीतिक रूप से पत्तन क्षेत्र के भीतर स्थित हैं। इन झीलों का नाम महाराष्ट्र के पूज्य संतों संत ज्ञानेश्वर महाराज, संत एकनाथ महाराज और संत नामदेव महाराज के सम्मान में रखा गया है। इन सभी झीलों का कायाकल्प और सौंदर्यीकरण किया गया जो वर्षा जल संचयन और आवास बहाली के लिए महत्वपूर्ण जलाशयों के रूप में काम करेंगे।

इस लेख में, जेएनपीए में शेवा मंदिर और शेवा तलहटी के पास जल निकाय के कायाकल्प को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है । जेएनपीए परियोजना स्थल पर्णपाती और सदाबहार वनस्पति से समृद्ध है और अनेकों पशु - पक्षियों (विशेषकर - स्वर्ग पक्षी) तथा तितलियों के अच्छे आवास हैं । वर्तमान में, ये खतरे में हैं जो एक नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र का संकेत देते हैं। परिसर के स्वरूप और ढांचागत जरूरतों के कारण, पिछले कुछ वर्षों में झीलों का प्राकृतिक प्रवाह और बहिर्वाह बाधित हुआ है, जिससे व्यापक मिट्टी का कटाव हुआ है। इन चुनौतियों के जवाब में, जेएनपीए ने अपने दृष्टिकोण में हरित पहल को शामिल किया है। इस पहल में उनके परिसर के आसपास जल निकायों का कायाकल्प, जल चैनलों का पुनरुद्धार, योजनबद्ध वृक्षारोपण प्रयास और मिट्टी के आवरण की बहाली सहित अन्य गतिविधियाँ शामिल हैं।

भूमि-उपयोग योजना, पर्यावरण संरक्षण और आपदा प्रबंधन सहित विभिन्न उद्देश्यों के लिए इस क्षेत्र की स्थलाकृति को समझना और उसका विश्लेषण करना आवश्यक था। इसने प्राकृतिक विशेषताओं में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की जो परिदृश्य को परिभाषित करती है और उन निर्णयों को सूचित करने में मदद करती है, जो क्षेत्र के सतत विकास और पारिस्थितिक कल्याण को प्रभावित कर सकते हैं ।

पर्यावरण अध्ययन और जल निकाय कायाकल्प परियोजनाओं में उत्कृष्टता हासिल करने वाली मुंबई स्थित फर्म, ग्रासरूट्स रिसर्च एंड कंसल्टेंसी को जेएनपीए की पारिस्थितिकी और जैव विविधता को पुनर्जीवित करने के लिए नियुक्त किया गया था । पूरे जलग्रहण क्षेत्र की समझ ने जमीनीस्तर की टीम को जल निकायों के उपचार के लिए उचित समाधान निकालने और उन्हें लंबे समय तक बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। यहाँ जमीनी स्तर पर लक्ष्य; जल संसाधनों का दोहन करना और जैव विविधता को बढ़ाने के लिए उन्हें साल भर बनाए रखना था, जिससे मानव का वनस्पतियों और जीवों के साथ जुड़ाव बढ़े।

यहाँ तीन प्रमुख क्षेत्र हैं जिन्हें जेएनपीए ने अनुसंधान और परामर्श की मदद से पुनर्जीवित किया ।

1) शेवा झील
2) प्रशासन भवन तलहटी झीलें
3) केंद्रीकृत पार्किंग प्लाजा (सीपीपी) क्षेत्र के पास झीलें

शेवा झील - इस स्थल में भौगोलिक रूप से आपस में जुड़ी हुई 3 झीलें हैं। जेएनपीए का प्रयास उनके जल प्रवाह को निर्बाध रूप से जोड़ना और पारिस्थितिक जैव विविधता को बढ़ाना था। झीलों के माध्यम से स्वच्छ पानी के निर्बाध प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए, इसके प्रवेश बिंदु पर गेबियन दीवारों के इको तकनीकी सम्मिलन का उपयोग किया।

शेवा झील क्षेत्र

प्रशासन भवन तलहटी झीलें - इस प्रकार बनी झील काफी उथली है और गर्मियों में वाष्पित हो जाती है। इसका उद्देश्य झील में वनस्पति और एक्वा फ्लोरा और जीवों को बढ़ावा देने के लिए झील में पूरे वर्ष पानी बनाए रखना है। इसलिए झील के उथले आधार पर 2 संकेंद्रित गेबियन दीवार के किनारों को पानी को रोकने के लिए तैयार किया गया है, जिससे पूरे वर्ष इस स्थान की सुंदरता और पवित्रता बनी रहे ।

तलहटी में प्रशासन भवन की झील

केंद्रीकृत पार्किंग प्लाजा (सीपीपी) क्षेत्र के पास झीलें - ये झीलें अधिकतर अछूती हैं। सबसे अधिक प्राकृतिक प्रचुरता है। यहाँ उद्देश्य जल संसाधनों का दोहन करना और जैव विविधता को बढ़ाने के लिए उन्हें साल भर बनाए रखना था। सीपीपी (केंद्रीकृत पार्किंग प्लाजा) क्षेत्र के निकट होने के कारण, साइट पर सबसे अधिक संख्या में लोग आने वाले थे। कटाव को नियंत्रित करने के लिए पारिस्थितिक समाधान का प्रस्ताव करना और जैव विविधता को बढ़ाते हुए प्राकृतिक निवास में दूसरों के साथ इकट्ठा होने और जुड़ने के लिए खुली जगह प्रदान करना, कुछ प्रमुख लक्ष्य थे। इन झीलों के लिए गेबियन किनारा भी किया गया था क्योंकि गेबियन दीवार बहाल पानी और स्वदेशी वनस्पतियों के लिए सांस लेने की सुविधा प्रदान करती है।

सी पी पी क्षेत्र की झील

सी पी पी क्षेत्र की झील

इस परियोजना के माध्यम से जेएनपीए द्वारा प्राप्त लक्ष्य -

- झीलों में पानी की गुणवत्ता और मात्रा में वृद्धि
- उन्नत जैव विविधता
- जलग्रहण क्षेत्र में कटाव नियंत्रण
- भूजलस्तर को रिचार्ज करना
- झील परिक्षेत्र का सुधार
- स्थानीय लोगों और आगंतुकों के साथ जुड़ाव

****

वाढवण ग्रीनफील्ड पत्तन का विकास

श्री. विश्वनाथ घरत, उप महाप्रबंधक (पत्तन योजना एवं विकास विभाग)
जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण, नवी मुंबई

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण और महाराष्ट्र मैरीटाइम बोर्ड द्वारा वाढवण पत्तन विकसित करने की योजना है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने महाराष्ट्र के वाढवण में हर मौसम के अनुकूल ग्रीनफील्ड डीपड्राफ्ट प्रमुख पत्तन के विकास के लिये 19 जून 2024 को भारत सरकार के कैबिनेट ने मंजूरी दी है । कैबिनेट ने सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा पत्तन और राष्ट्रीय राजमार्गों के बीच सड़क संपर्क स्थापित करने और रेल मंत्रालय द्वारा मौजूदा रेल नेटवर्क और आगामी समर्पित रेल फ्रेट कॉरिडोर के लिए रेल लिंकेज को भी मंजूरी दे दी। पत्तन,पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय ने 19 फरवरी, 2020 को भारतीय पत्तन अधिनियम के तहत वाढवण पत्तन को एक प्रमुख पत्तन के रूप में घोषित करते हुए, एक अधिसूचना प्रकाशित की है। इस परियोजना की अनुमानित लागत रु. 76,200 करोड़ से पूरा होने पर पत्तन दुनिया के शीर्ष 10 बंदरगाहों में से एक होगा। वाढवण पत्तन की आगामी समर्पित माल गलियारों (Dedicated Freight Corridors) के साथ अंतर्देशीय समूहों से इसकी निकटता के कारण, यह पत्तन की माल ढुलाई लागत को कम करेगा । परियोजना में न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव के साथ एक अत्याधुनिक कार्गो हैंडलिंग प्रणाली होगी ।

वाढवण स्थल से 10 किमी की दूरी पर जल की प्राकृतिक गहराई लगभग 20.0 मीटर सी. डी (चार्ट डेटाम) नीचे उपलब्ध है और नई पीढ़ी के जहाजों के सुरक्षित मार्ग और लंगर डालने के लिए 6 किमी की दूरी पर 15 मीटर की एक रूपरेखा उपलब्ध है। चूंकि 6 से 10 किमी तक गहरे पानी की गहराई उपलब्ध है, इसलिए गहरे ड्राफ्ट (डुबाव) की आवश्यकता वाले नई पीढ़ी के जहाजों की योजना कम लागत पर बनाई जा सकती है।

इस विस्तार को अफ्रीका के पूर्वी तट, भारत के पश्चिमी तट और फारस की खाड़ी के देशों के बीच कंटेनर यातायात के लिए अरब सागर में एक हब पत्तन के रूप में भी तैनात किया जा सकता है। गहरा ड्राफ्ट, पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भारत तक बड़ी अंतर्देशीय पहुँच, रेल और सड़क नेटवर्क के माध्यम से बेहतर ऑफलोडिंग संभावनाऐ, एक किमी लंबे कंटेनर यार्ड के साथ लंबे कंटेनर टर्मिनल और जमींदार (लैंडलॉर्ड) पत्तन विकास मॉडल ने बड़े निजी ऑपरेटरों को अपने औद्योगिक प्रतिष्ठान खोलने के लिए आकर्षित किया है। विस्तारित पत्तन में उनके कंटेनर टर्मिनल 16,000-24,000 टीईयू क्षमता के अपने कंटेनर जहाजों को बुलाएंगे और फिर उनके कंटेनरों को पत्तन से एकत्र / डिलीवर करेंगे। पत्तन स्थल के पास एक मेगा पत्तन होने के प्राकृतिक और रणनीतिक फायदे हैं और इसमें 300 मिलियन टन की ढुलाई हासिल करने की क्षमता है।

सृजित क्षमताएं IMEEC (भारत मध्य पूर्व यूरोप आर्थिक गलियारा) और INSTC (अंतर्राष्ट्रीय उत्तर दक्षिण परिवहन गलियारा) के माध्यम से EXIM व्यापार प्रवाह में भी सहायता करेंगी। विश्व स्तरीय समुद्री टर्मिनल सुविधाऐ सार्वजनिक - निजी भागीदारी (पीपीपी) को बढ़ावा देती हैं और सुदूर पूर्व, यूरोप के बीच अंतरराष्ट्रीय शिपिंग लाइनों पर चलने वाले मेनलाइन मेगा जहाजों को संभालने में सक्षम अत्याधुनिक टर्मिनल बनाने के लिए दक्षता और आधुनिक प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाती हैं। प्रधानमंत्री गति शक्ति कार्यक्रम के उद्देश्यों के अनुरूप यह परियोजना आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाएगी और बहुसंख्य व्यक्तियों के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर भी

प्रदान करेगी, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढावा मिलेगा। पत्तन को वाढवण में अंतर-ज्वारीय क्षेत्र पर स्थापित करने की योजना है। यह परियोजना एक ‘ग्रीनफ़ील्ड’ परियोजना है और इसे पर्यावरण, मत्स्य पालन, मैंग्रोव और स्थानीय लोगों पर न्यूनतम प्रभाव के साथ बनाने का प्रस्ताव है। आधुनिक सुविधाओं, गहरे ड्राफ्ट और पर्याप्त क्षमता होने के कारण; यातायात का एक बड़ा हिस्सा हासिल होने की उम्मीद है । इस विस्तार की कुछ मुख्य बातें इस प्रकार हैं।

- पत्तन को गहरे ड्राफ्ट वाले स्थान पर विकसित किया गया है जो बार-बार ड्रेजिंग के बिना चैनल उपलब्धता प्रदान करेगा। इससे पत्तन रखरखाव की लागत कम हो जाएगी, जिसके परिणामस्वरूप कंटेनर हैंडलिंग के लिए अनुकूल दरें प्राप्त होंगी।
- इसमें न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव के साथ परिष्कृत कार्गो हैंडलिंग प्रणाली होगी।

सरकारी पहल और गहरे डुबाव के कारण पारदर्शिता के संयोजन से क्षेत्र के अन्य बंदरगाहों की तुलना में डेवलपर्स के लिए पत्तन का आकर्षण बढ़ जाएगा। बड़ी शिपिंग लाइनें, कंटेनर बंदरगाहों और कंटेनर टर्मिनलों का स्वामित्व और संचालन करना चाहती हैं। भारत में ऐसे अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। इसलिए एक शिपिंग लाइन के साथ एक पत्तन डेवलपर की साझेदारी से पत्तन के वाणिज्यिक आकर्षण में वृद्धि होने की संभावना है।

वाढवण पत्तन को जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण और महाराष्ट्र मैरीटाइम बोर्ड द्वारा क्रमश: 74% और 26% इक्विटी शेयरों के साथ एक संयुक्त उद्यम परियोजना के रूप में विकसित करने की योजना है। पत्तन का विकास दो चरणों में किया जाएगा। प्रस्तावित पत्तन को जमींदार मॉडल पर विकसित किया जाना है और पत्तन टर्मिनल को पीपीपी आधार पर विकसित किया जाएगा। इस मॉडल में, अग्रिम निवेश की आवश्यकता वाले बुनियादी पत्तन ढांचे जैसे ब्रेकवाटर, रेल और सड़क लिंक, बिजली, पानी की लाइनें और सामान्य बुनियादी ढांचे और सेवाओं को पत्तन / एसपीवी द्वारा विकसित किया जाएगा, जबकि सभी कार्गो हैंडलिंग बुनियादी ढांचे का विकास और संचालन उन एजेंसियों द्वारा किया जाएगा, जिन एजेंसियों को पत्तन द्वारा खुले और पारदर्शी तरीके से वैश्विक निविदाओं के माध्यम से रियायतें प्रदान की जाती हैं।

पत्तन के पहले चरण के विकास में निम्नलिखित घटक होंगे:

भीतरी पत्तन विकास :

- मुख्य ब्रेकवाटर की कुल लंबाई 10.14 किमी
- पत्तन क्राफ्ट / टग बर्थ 200 मी.
- पत्तन के भीतर कुल पुनर्वास क्षेत्र 1448 हेक्टेयर है। चरण 1 में 1162 हेक्टेयर
- भीतरी पत्तन सड़क 32 कि.मी
- डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर रेलवे यार्ड 227.5 हेक्टेयर

वाढवण बंदर
VADHVAN
—PORT—
VADHVAN PORT PROJECT LTD.
PORT OF
VIKSIT BHARAT

23,500 वर्ग मीटर क्षेत्रफल वाली इमारतें
पत्तन के अंदर पदयात्रियों के लिए फुटपाथ

बाहरी पत्तन विकास :

- भूमि अधिग्रहण 571. हे. (सड़क और रेल कनेक्टिविटी के लिए)
- बाहरी सड़क संपर्क 32 किमी 120 मीटर चौड़ा गलियारा
- रेलवे कनेक्टिविटी क्षेत्र 12 किमी लंबा 60 मीटर चौड़ा गलियारा
- कुर्जे डैम से पानी की पाइपलाइन होगी जो पत्तन स्थल से लगभग 65 किमी. दूर है
- पावर ग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड लाइन / तारापुर बोइसर पावर स्टेशन की बिजली लाइन पत्तन से 20 किमी. की दूरी पर होगी।

विकासक :

- भंडारण यार्ड, उपकरण, टर्मिनल फुटपाथ, जल निकासी, उपयोगिता नेटवर्क आदि सहित कंटेनर टर्मिनल, जिसकी कुल बर्थ लंबाई 9000 मीटर है (चरण –1 में 4 टर्मिनल और चरण –2 में 1000 मीटर प्रत्येक के 5 टर्मिनल) जहाजों को संभालने में सक्षम हैं . जिसमें 24,000 टीईयू और 24,000 से अधिक टीईयू डिजाइन कंटेनर जहाज शामिल हैं।
- 1000 मीटर (प्रत्येक 250 मीटर की 4 बर्थ) उपकरण, भंडारण यार्ड / शेड के साथ बहुउद्देशीय बर्थ
- भंडारण और तटवर्ती सुविधाओं के साथ 250 मीटर की 1 रो रो बर्थ
- पाइपलाइनों और टैंक फार्मों के साथ 4 तरल कार्गो टर्मिनल

वाढवण पत्तन परियोजना को पालघर जिले के डहानू तालुक के वाढवण में एक प्रमुख पत्तन की स्थापना और विकास के लिए 31 जुलाई 2023 को डहानू तालुका पर्यावरण संरक्षण प्राधिकरण (डीटीईपीए) से अनुमति मिल गई है। महाराष्ट्र तटीय क्षेत्र नियामक प्राधिकरण (एमसीजेडएमए) ने पत्तन के विकास को मंजूरी दे दी है। 6 फरवरी 2023 को अपनी 172वीं बैठक में पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार ने अनुमोदन के लिए तटीय विनियमन क्षेत्र (सीआरजेड) की सिफारिश की है। खनन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आरक्षण के लिए अपतटीय क्षेत्र खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 2002 के तहत पत्तन रेत खनन लाइसेंस का विस्तार 21 दिसंबर 2023 के भारत के असाधारण राजपत्र के माध्यम से खान मंत्रालय से प्राप्त हुआ है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार ने पर्यावरणीय प्रभाव आकलन अधिसूचना 2006 और तटीय नियामक क्षेत्र अधिसूचना 2019 के प्रावधानों के तहत जिला–पालघर, महाराष्ट्र में ग्रीनफील्ड वाढवण पत्तन के विकास के लिए प्रस्तावित परियोजना को दिनांक 16/02/2024 में पर्यावरणीय मंजूरी और तटीय विनियमन क्षेत्र की मंजूरी दे दी है।

जानकारी एकत्र करने और यह सुनिश्चित करने के लिए एक व्यापक अध्ययन और सर्वेक्षण किया गया है कि पत्तन के आसपास रहने वाले मछुआरों को राज्य सरकार की नीति के अनुसार उनकी आजीविका और मत्स्य पालन से आय के लिए वित्तीय मुआवजा दिया जाएगा। छोटे और बड़े पैमाने पर रोजगार और व्यवसाय सृजन ने जेएनपीए के आसपास के क्षेत्र और वहां रहने वाले स्थानीय लोगों के जीवनस्तर को ऊपर उठाया है और हमारा मानना है कि पत्तन विस्तार के विकास से इस खंड के स्थानीय लोगों के जीवन में भी ऐसे बदलाव आएंगे। इसके अलावा मछुआरों के लिए उन्नत मछली पकड़ने की तकनीक जैसे पिंजरे की संस्कृति और छोटे मछुआरों के लिए मछली संरक्षण और प्रसंस्करण प्रशिक्षण सीएमएफआरआई की मदद से प्रदान किया जा रहा है ।

प्रस्तावित परियोजना का क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर सीधा सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा जिससे कई अंतर-क्षेत्रीय (स्वास्थ्य, आतिथ्य, परिवहन वाणिज्य, व्यापार आदि) अवसर पैदा होंगे। भीतरी इलाकों से पत्तन तक कनेक्टिविटी बढ़ने से आसपास के क्षेत्रों से स्थानीय उत्पादों, वस्तुओं, हस्तशिल्प और फसलों के निर्यात, व्यापार और विपणन का दायरा और मूल्यवर्धन बढ़ेगा।

वाढवण पत्तन के विकास से निर्माण चरण के साथ-साथ संचालन चरण के दौरान स्थानीय लोगों को रोजगार के बड़े अवसर मिलेंगे। मौजूदा राष्ट्रीय राजमार्ग से पत्तन (32 किमी), पालघर रेलवे स्टेशन से पत्तन (12 किमी) रेल लाइन, ब्रेकवाटर और विभिन्न सिविल कार्यों आदि के लिए समर्पित सड़क के लिए अधिक कुशल, अर्ध-कुशल और अकुशल श्रेणी के व्यक्तियों की आवश्यकता होगी। बड़ी संख्या में कुशल व्यक्तियों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, जनेप प्राधिकरण ने पहले ही 14 व्यवसायों में कौशल विकास प्रशिक्षण शुरू कर दिया है ताकि परियोजना निर्माण के शुरुआती चरणों में स्थानीय युवाओं को सशक्त बनाया जा सके।

वाढवण पत्तन से महाराष्ट्र राज्य को लाभ :

(i) वाढवण वाढवण पत्तन को एक मेगा पत्तन के रूप में विकसित किया जा रहा है, जो महाराष्ट्र का गौरव है क्योंकि मास्टर प्लान के पूरा होने के बाद इसे दुनिया के पहले 10 बंदरगाहों में स्थान दिया जाएगा।

(ii) पत्तन क्षेत्र में 76,220 करोड़ रुपये का सबसे बड़ा निवेश और यह 300 मिलियन मीट्रिक टन को संभालने के लिए महाराष्ट्र में उद्योगों, व्यापार, आपूर्ति श्रृंखला में निवेश को आकर्षित करेगा।

(iii) वाढवण पत्तन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बहुसंख्य स्थानीय लोगों को नौकरी का अवसर देगा।

(iv) डहानू के आसपास के क्षेत्र में रहने वाले एक आदिवासी को रोजगार या स्व-रोज़गार पाने के लिए कौशल विकास और क्षमता वृद्धि प्रदान की जाएगी।

(v) डहानू और उसके आसपास पिछले कई दशकों के अविकसित क्षेत्र को अब नासिक और महाराष्ट्र के अन्य हिस्सों के साथ-साथ इसके निकटवर्ती इलाकों के साथ विकसित किया जाएगा।

(vi) प्रस्तावित परियोजना का क्षेत्र की सामाजिक आर्थिक स्थितियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

(vii) भीतरी इलाकों से वाढवण पत्तन की कनेक्टिविटी, आसपास के क्षेत्रों से स्थानीय उत्पादों, वस्तुओं, हस्तशिल्प और फसल के निर्यात, व्यापार और विपणन के दायरे को बढ़ाएगी और मूल्य बढ़ाएगी।

(viii) परियोजना निर्माण और संचालन रॉयल्टी, कर के भुगतान और पत्तन राजस्व के बंटवारे के माध्यम से राज्य और केंद्र सरकार के लिए राजस्व उत्पन्न करेगा।

(ix) पत्तन विकास क्षेत्र में निवेश को आकर्षित करेगा और इस तरह महाराष्ट्र राज्य की आर्थिक वृद्धि में योगदान देगा।

(x) कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के एक भाग के रूप में, वाढवण और आसपास के अन्य गांवों के लोगों के जीवन स्तर में सुधार के लिए गतिविधियाँ शुरू करने का प्रस्ताव करेगा।

ग्रीन पत्तन उपक्रम :

वाढवण में प्रस्तावित पत्तन का उद्देश्य जेएनपीए द्वारा दीर्घकालिक प्रतिबद्धता, नवाचार और हितों और व्यापार दर्शन के संरेखण के साथ-साथ पत्तन प्रौद्योगिकी, सिस्टम और जनशक्ति में निवेश प्रदान करना है। ये स्थायी समाधान जलवायु परिवर्तन जोखिम विश्लेषण और कार्य कुशलता पर आधारित होंगे; (i) नवीकरणीय ऊर्जा, (ii) वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोत, (iii) तटीय बिजली आपूर्ति, (iv) कुशल पत्तन संचालन, (v) अन्य हरित पहल और इस प्रकार संचालन चरण के दौरान कार्बन पदचिह्न (carbon foot print) और ऊर्जा लागत को कम करना।

जनेप प्राधिकरण तथा वाढवण पत्तन प्रोजेक्ट लिमिटेड एक जिम्मेदार सार्वजनिक निकाय होने के नाते, पत्तन के निर्माण से लेकर संचालन तक पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण उपायों का पालन करने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। वाढवण पत्तन का विवरण www.vadhvanport.in पर उपलब्ध है।

****

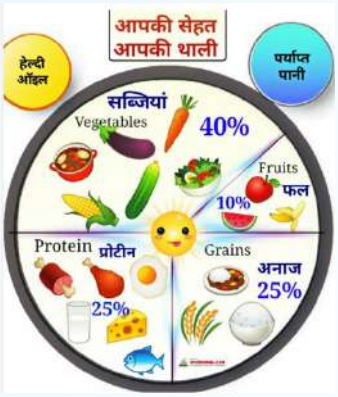

अन्न-खाद्य-आहार : आहार के बिना किसी भी जीव या मनुष्य का जीवन संभव नहीं है। आहार मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। आहार द्वारा मनुष्य को कार्य करने के लिए ऊर्जा मिलती है, जिससे मनुष्य अपनी शारीरिक एवं मानसिक क्रियाऐं पूर्ण करता है । वह पदार्थ जिसके सेवन से किसी भी जीव का पोषण होता है, वह अन्न या खाद्य पदार्थ की श्रेणी में आता है । आमतौर पर खाद्य पदार्थों में विभिन्न प्रकार के अन्न, हरे-पत्ते, फल-पौधे, कंद-मूल या पशु से प्राप्त दूध, दूध से बने पदार्थ), मांस ये सब शामिल होता है। मनुष्य अपने नित्य आहार में जब इन खाद्य पदार्थों का सेवन करता है तो उसे कार्बोहाइड्रेट,वसा फैट), प्रोटीन, विटामिन और खनिज जैसे आवश्यक पोषक तत्व मिलते हैं।

आहार पोषण प्रकार: पोषण उन सभी प्रक्रियाओं का सार है जिससे मनुष्य शरीर पोषित होता है। मनुष्य आहार पोषण के दो प्रकार हैं, सुपोषण और कुपोषण। सुपोषित व्यक्ति स्वस्थ होता है । वह संतुलित आहार ग्रहण करता है और उसके शरीर के विभिन्न शारीरिक लक्षण उसके उत्तम स्वस्थ्य की ओर इशारा करते हैं। वहीं दूसरी ओर कुपोषण की दो प्रमुख स्थितियाँ होती हैं - अतिपोषण एवं अल्प पोषण। अल्पपोषण आहार में मुख्यतः पोषक तत्वों और पर्याप्त ऊर्जा की कमी होती है, जबकि अतिपोषण आहार में अत्यधिक पोषक तत्व और ऊर्जा होती है। अतिपोषण रोग मोटापा, PCOD,टाइप 2 मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग,स्ट्रोक) एवं अल्प पोषण खास कर बच्चों में बौनापन, कम वजन, महिलाओं में रक्त अल्पता, ऑस्टियोपोरोसिस). **कुपोषण एक बढ़ता हुआ वैश्विक स्वास्थ्य खतरा बन गया है।**

अन्न / खाद्य संस्कृति / बाज़ार: 1990 के बाद का खुला बाजार, वैश्वीकरण, शहरीकरण, पश्चिमी भोजन प्रथाओं का अंधानुकरण, फास्टफूड संस्कृति को मिलता बढ़ावा, फोन-पे खाना ऑर्डर करने का बढ़ता चलन, पारंपरिक खाद्य व्यंजनों में आई कमी, गांवों से शहरों की ओर पलायन, प्राचीन कृषि पद्धतियों में कमी, जंगलों का कम होना, बढ़ती व्यावसायिक-रासायनिक कृषि गतिविधियाँ, इन सभी कारणों से हम सभी भारतीय अपने पुराने पारंपरिक क्षेत्रीय खाद्य पदार्थ, व्यंजन, अन्न, अनाज भूलकर अधिक गेंहूं,चावल, मैदे से बने खाद्य पदार्थों का सेवन कर रहे हैं और यही कारण है कि आज हमारे बच्चे और नौजवान, सभी किसी न किसी कुपोषण से ग्रस्त होते दिखाई दे रहे हैं । **क्या इसका कोई इलाज है ?**

श्री अन्न- मिलेट्स- एक खाद्य वरदान ! मिलेट्स - जिसे जऊ, जौ के नाम से भी जाना जाता है) सदियों से भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है। मिलेट्स विविध प्रकार के छोटे-बड़े बीजों वाली घास का एक समूह है, जिसे दुनिया भर में व्यापक रूप से उगाया जाता आया है । एशिया खंड में इन मिलेट्स के अनेकों स्वरूप जैसे बाजरा, ज्वार, रागी, कोदों, फोटा, सावा आदि प्रसिद्ध हैं। भारत में श्री अन्न का आनंद लोग हजारों वर्षों से लेते आ रहे हैं, श्री अन्न का उल्लेख यजुर्वेद में भी पाया गया है । ये श्री अन्न पशुओं और पक्षियों का भी भोजन है ।

पर्यावरण-जल-वायु प्रदूषण, अनियमित बारिश, सूखे की मार से घटते कृषि उत्पाद से किसान परेशान हैं। ऐसे किसानों के लिएश्री अन्न की खेती एक अवसर बनकर सामने आयी है, क्योंकि श्री अन्न एक तेजी से बढ़ने वाला, सूखा प्रतिरोधी, कम लागत की आवश्यकता वाला और बंजर ज़मीन में भी ऊगने वाला कृषि अन्न है। इसके साथ ही श्री अन्न अपने पोषक गुणों की वजह से स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है । इन्हीं सब वजहों से श्री अन्न की खेती गेहूं और चावल के विकल्प के रूप में प्रसिद्ध हो रही है । भारत सरकार भी अब किसानों को श्री अन्न की खेती की सलाह दे रही है।

भारत के प्रस्ताव के आधार पर, संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष (आईवाईएम) के रूप में घोषित किया गया था। ***प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 18 मार्च, 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स (श्री अन्न) सम्मेलन का उद्घाटन किया।*** भारत को 'श्री अन्न के लिए वैश्विक हब' के रूप में स्थापित करने का माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी का दृष्टिकोण है, इसी के अनुसार केंद्र सरकार सभी मंत्रालयों/ विभागों, राज्यों/ केंद्रशासित प्रदेशों, किसानों, स्टार्ट-अप, निर्यातकों, खुदरा व्यवसायों और उपभोक्ताओं के लिए मिलेट (श्री अन्न) के लाभों के बारे में जागरूकता फैलाने और प्रचार करने में अग्रसर दिख रही है।

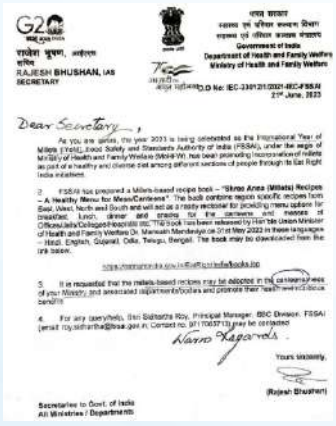

पत्तन कैंटीन में श्री-अन्न: सभी मंत्रालयों के अंतर्गत कैंटीन में श्री-अन्न से बने व्यंजनों को बढ़ावा मिले इसके लिए भारत सरकार की स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय सचिव ने एक पत्र द्वारा यह अनुरोध किया है कि FSSAI ने **मिलेट्स-बाजरा-आधारित रेसिपी पुस्तक** - "श्री अन्न बाजरा) रेसिपी - **मेस /कैंटीन के लिए एक स्वस्थ व्यंजन मेनू**" तैयार की है, उससे अपने क्षेत्र के विशिष्ट व्यंजनों में मिलेट्स-श्री-अन्न को शामिल कर नाश्ते, दोपहर के भोजन, रात के खाने और स्नैक्स के लिए मेनू तैयार करने के लिए एक रेडी रेकनर के रूप में उपयोग करें और श्री-अन्न को कैंटीन में बढ़ावा दें जिससे सभी कर्मचारियों को स्वास्थ्य लाभ मिल सके। ऐसी पहल पत्तन की कैंटीन में भी की जा सकती है ।

रेसेपी पुस्तक लिंक: https://eatrightindia.gov.in/EatRightIndia/books.jsp

श्री अन्न -मिलेट्स-एक खाद्य वरदान- भाग 2 में हम विभिन्न मिलेट्स के पोषक लाभ ,आसान व्यंजन पढ़ेंगे।

क्या है श्री अन्न / मिलेट्स: श्री शब्द का एक अर्थ - शुभ या योग्य और अन्न शब्द का अर्थ है - भोज्य पदार्थ। तो ***श्री-अन्न का पूरा अर्थ- योग्य भोज्य अन्न*** हो जाता है। जैसे कि हम सभी ने पहले भाग में मिलेट्स श्री-अन्न) के बारे में जाना कि कैसे पिछले कुछ सदियों से वैश्वीकरण और आधुनिक खाद्य संस्कृति के बढ़ते चलन की वजह से श्री अन्न से मिलने वाले पोषक मूल्यों के बावजूद, श्री अन्न का उपयोग भारत की ज्यादातर आबादी, खास कर शहरी आबादी में देखने को नहीं मिलती है। आज भी श्री अन्न की खेती, मुख्य कृषि फसलों गेंहू, चावल) में से गायब है। इस सब का एक ही कारण है अपर्याप्त ज्ञान! हालांकि श्री अन्न आज भी आदिवासी समाज का मुख्य खाद्य पदार्थ है। ***अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स श्री अन्न) कृषि सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी ने*** कहा है कि, "श्री-अन्न आदिवासी समुदाय का सम्मान है, श्री-अन्न कम पानी में अधिक फसलें और रसायन मुक्त खेती की ओर एक नया कदम है, श्री-अन्न जलवायु प्रदूषण से लड़ने का एक साधन है, श्री-अन्न- देश के छोटे किसानों के लिए एक उम्मीद और समृद्धि का नया दरवाजा है, श्री-अन्न भारत देश के हर एक नागरिक के सुपोषण के लिए पोषक खाद्य पदार्थ और अच्छे स्वास्थ्य की गारंटी है।

श्री अन्न के कुछ प्रसिद्ध प्रकार /पोषक गुण/आसान व्यंजन :

बाजरा Pearl Millet): सभी उम्र के लोगों के लिए अत्यधिक पौष्टिक अनाज, कैल्शियम, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस और आयरन से भरपूर, रोटी, दलिया और अन्य व्यंजन बनाने में उपयोगी	**पोषक फायदे** *वजन घटाने में मददगार* *हृदय स्वास्थ्य के लिए अच्छा* *डाइबीटीज़ में रक्त शुगर में सुधार* *एनीमिया में गुणकारी* *कब्ज में फायदे मंद / पाचन में सुधार*	**पौष्टिक व्यंजन: बाजरा सूप/राब:** बाजरा200ग्राम, पानी300मि.ली, गुड़ 20 ग्राम, इलायची पाउडर 5 ग्राम, घी 1 चमच। बनाने में आसान, गुणकारी, शक्तिवर्धक,

रागी (Little Millet): सभी मिलेट्स में रागी में कैल्शियम, पोटेशियम की मात्रा सबसे अधिक, अमीनो एसिड की भरपूर मात्रा, पर अधिक ***oxalates की वजह से मूत्र में पथरी-किडनी विकार में सेवन न करें****	**पोषक फायदे** *कैल्शियम स्रोत- हड्डियों की मजबूती के लिए* *एंटीऑक्सिडेंट अच्छा स्रोत* *ग्लूटेन एलर्जी और सीलिएक रोग से पीड़ित लोगों के लिए सुरक्षित है- कब्ज में फायदेमंद* *कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स- रक्त की शुगर कम* *लोह का अच्छा स्रोत - रक्त अल्पता में सुधार*	**पौष्टिक व्यंजन: रागी इडली** रागी, उड़द डाल, मेथी दाने, दही, तेल बनाने में आसान, बेहतर नाश्ता,लौह, कैल्शियम, फास्फोरस, बी कॉम्पलेक्स पोषक तत्वों से भरपूर

राजगीरा Amaranth) :	पोषक फायदे	पौष्टिक व्यंजन: राजगिरा कटलेट
पौधे आधारित प्रोटीन का उत्तम स्त्रोत, ग्लूटेन मुक्त, अधिक फाइबर, आवश्यक विटामिन बी6, फोलेट और विटामिन ई खनिजों जैसे आयरन, मैग्नेसियम, जिंक सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर	*प्रोटीन से शरीर को बल वर्धक* *फाइबर से कब्ज से मुक्ति* *सूजन रोधी गुण से बीमारी में आराम* *रक्त अल्पता, हड्डी स्वास्थ्य में लाभ* *जिंक तत्व से संक्रमण से प्रतिरक्षा और प्रजनन क्षमता में वृद्धि*	राजगिरा आटा,शकरकंद, प्याज, धनिया, नींबू, चाट मसाला,नमक - स्वादिष्ठ फाइबर, प्रोटीन, कैल्सीयम, आयरन पोषण से भरपूर नाश्ता

कुटकी Little Millet):	पोषक फायदे	पौष्टिक व्यंजन: कुटकी दोसा
विटामिन और मैग्नीशियम, आयरन, जिंक, बी विटामिन खनिजों से भरपूर - ग्लूटेन मुक्त आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर	*मांसपेशियों की रिकवरी में फायदेमंद* *सूजन को कम करता है* *हड्डियों केस्वास्थ्य में सुधार* *रक्त ग्लूकोस स्तर स्थिर रखता है* *बलवर्धक ऊर्जा प्रदान करता है*	कुटकी-उदीद डाल का बैटर, मेथी दाने, नमक, मसले, चटनी - स्वादिष्ठ प्रोटीन, विटामिन खनिजों से युक्त पोषक नास्ता

कोदो KODO Millet):	पोषक फायदे	पौष्टिक व्यंजन: कोदो शक्तिवर्धक पेय:
अधिक फ़ाइबर, प्रोटीन और लोह, कैल्शियम जैसे खनिज और औषधीय गुणों तथा पोषण से भरपूर 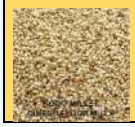	*फाइबर -कब्ज में फायदा* *कम ग्लाइसेमीक -रक्त में ग्लूकोज कम* *हृदय स्वास्थ्य के लिए अच्छा* *मधुमेह को प्रबंधित करने में मदद* *वजन प्रबंधन में मदद*	कोदो पकाकर, संतरा, अननस कोई दूसरे फलों के जूस में ब्लेन्ड कर आसान विटामिन खनिजों से युक्त पौष्टिक पेय तैयार

तो हम ने देखा कि श्री-अन्न प्रोटीन, कार्ब्स, फाइबर, स्वस्थ वसा, आवश्यक विटामिन और कैल्शियम, लोहा, पोटेशियम और मैग्नीशियम जैसे खनिजों से भरपूर हैं। वे पोषण संबंधी पावरहाउस के रूप में प्रसिद्ध हो रहे हैं। यह प्रतिरक्षा, वजन घटाने और समग्र स्वास्थ्य में मददगार साबित हो रहे हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने केंद्र सरकार द्वारा संचालित सभी अस्पतालों और संस्थानों को निर्देश दिया है कि वे अपनी कैंटीन में अस्वास्थ्यकर उच्च वसा वाले खाद्य समोसा, बटाटा वाडा, कचोरी) पदार्थों की बिक्री बंद कर दें और इसके बजाय ताजे भोजन को बढ़ावा दें। स्वास्थ्य मंत्रालय पिछले कुछ समय से देश के जनमानस, महिला, विद्यार्थी, युवा, बुजुर्ग, कर्मचारियों में स्वस्थ भोजन की आदतों को बढ़ावा देने पर ज़ोर दे रहा है और इसी को मद्देनजर रख जेएनपीए भी अपने कर्मचारियों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए अपनी कैन्टीनों में श्री अन्न युक्त व्यंजनों को बढ़ावा देने हेतु श्री-अन्न रेसपी किताब लिंक - https://eatrightindia.gov.in/EatRightIndia/books.jsp) में बताए कुछ आसान खाद्य व्यंजनों को अपनाकर, उन्हें अपने सभी कर्मचारियों के नाश्ते, भोजन के लिए उपलब्ध मेनू में एक विकल्प जिसके कुछ आसान पोषक व्यंजन इस लेख के चार्ट में बताए हैं प्रदान करे। हम सभी अपने घर परिवार में मिलेट्स रेसिपी बुक में बताए श्री अन्न युक्त व्यंजनों को अपनाकर संतुलित आहार लेकर अच्छे स्वाथ्य का आनंद लें।

********** **श्री अन्न की जय हो, भारत की जय हो** **********

डॉ मिलिंद भोसकर
वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी
जेएनपीए अस्पताल

जे एन पी ए एंटवर्प पोर्ट ट्रेनिंग एंड कंसल्टेंसी फाउंडेशन
(जेएनपीटी, भारत और एपेक एंटवर्प / फ़्लैंडर्स पोर्ट ट्रेनिंग सेंटर, बेल्जियम के बीच संयुक्त उद्यम)

भरत मढवी
वरिष्ठ प्रबंधक (कार्मिक)

अपेक-एंटवर्प / फ़्लैंडर्स पोर्ट ट्रेनिंग सेंटर पत्तन और समुद्री मामलों के लिए एक अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण संस्थान है जो विदेशों में मानक सेमिनार, अध्ययन यात्राओं और व्याख्यान के माध्यम से ज्ञान के हस्तांतरण पर ध्यान केंद्रित करता है । अपेक पाठ्यक्रम सिद्धांत और व्यवहार का एक आदर्श मिश्रण है जो पत्तन पेशेवरों को पत्तन, समुद्री और रसद मामलों से संबंधित अपनी विशेषज्ञता को अंत: क्रियात्मक रूप से बेहतर बनाने की अनुमति देता है ।

अपेक-एंटवर्प/फ़्लैंडर्स पोर्ट ट्रेनिंग सेंटर, एंटवर्प पोर्ट अथॉरिटी की एक सहयोगी कंपनी है । संक्षिप्त, व्यावहारिक और इंटरैक्टिव पाठ्यक्रमों के माध्यम से, अपेक-एंटवर्प/फ़्लैंडर्स पोर्ट ट्रेनिंग सेंटर लोगों को आधुनिक पत्तन संचालन के अधिकांश पहलूओं को सिखाता है ।

भारत में बंदरगाह क्षेत्र के लिए विश्व स्तरीय प्रशिक्षण सुविधा स्थापित करने हेतु जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण और अपेक-एंटवर्प/फ़्लैंडर्स पोर्ट ट्रेनिंग सेंटर एन.पी.ओ. के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए । 12 फरवरी 2015 को समझौता ज्ञापन पांच साल के लिए वैध था, जिस पर भारत और पड़ोसी देशों में बंदरगाह अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण सुविधा प्रदान करने के लिए 14 फरवरी 2020 को 5 साल की अवधि के लिए हस्ताक्षर किए गए । 13-14 अप्रैल 2016 को मुंबई में मैरीटाइम इंडिया शिखर सम्मेलन के दौरान जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास और अपेक के बीच शेयरधारक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे ।

'जेएनपीटी एंटवर्प पोर्ट ट्रेनिंग एंड कंसल्टेंसी फाउंडेशन' की स्थापना एक कंपनी 'नॉट फॉर प्रॉफिट' के रूप में की गई थी, जिसे 9 दिसंबर 2016 के कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 8 के तहत शामिल किया गया था, जिसमें भुगतान की गई पूंजी का योगदान जेएनपीटी और अपेक द्वारा समान रूप से किया गया था ।

जेएनपीटी ने प्रशिक्षण केंद्र के लिए एक विश्व स्तरीय बुनियादी सुविधा का निर्माण किया और अपेक, एंटवर्प बंदरगाह के संकाय केंद्र की शुरुआत से ही प्रशिक्षण सत्र दे रहे हैं । आम तौर पर प्रत्येक प्रशिक्षण कार्यक्रम 5 दिनों के लिए डिज़ाइन किया जाता है जिसमें कक्षा सत्र, क्षेत्र का दौरा और वरिष्ठ बंदरगाह अधिकारियों/उद्योग के प्रतिष्ठित कर्मियों के साथ बातचीत का एक स्वस्थ मिश्रण होता है । जेएनपीटी अपेक प्रशिक्षण केंद्र में अब तक 47 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं और मुख्य रूप से प्रमुख बंदरगाहों के लगभग 867 अधिकारियों ने सेमिनारों में भाग लिया है ।

अब तक, जेएनपीटी एंटवर्प पत्तन ट्रेनिंग एंड कंसल्टेंसी फाउंडेशन (एपीईसी ट्रेनिंग सेंटर) ने प्रमुख बंदरगाहों, निजी बंदरगाहों / टर्मिनलों, शिपिंग लाइनों, सरकारी संगठनों, बंदरगाह शिपिंग और जलमार्ग मंत्रालय, समुद्री बोर्ड आदि के अधिकारियों के लिए निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं ।

- स्वास्थ्य, सुरक्षा और गुणवत्ता
- स्मार्ट पत्तन तकनीकें और पत्तन एवं टर्मिनल अनुकूलन
- बंदरगाह पर्यावरण प्रबंधन एवं स्थिरता
- बंदरगाह एवं समुद्री सेवाऐं
- ड्रेजिंग तकनीकें
- बंदरगाह प्रबंधन और बंदरगाह व्यवसाय विकास एवं विपणन
- आई एम डी जी – स्वास्थ्य और सुरक्षा पर कोड और निहितार्थ
- विकारी खाद्य पदार्थ
- पत्तन परिभारिकी (पोर्ट लॉजिस्टिक्स)
- प्रशिक्षक को प्रशिक्षित करो

प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए, जेएनपीटी एंटवर्प पोर्ट ट्रेनिंग एंड कंसल्टेंसी फाउंडेशन, बेल्जियम के पोर्ट ऑफ एंटवर्प इंटरनेशनल की सहयोगी कंपनी, एपीईसी – एंटवर्प / फ़्लैंडर्स पोर्ट ट्रेनिंग सेंटर के संकाय सदस्यों को आमंत्रित कर रहा है। 5–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षण सत्र आयोजित करने के लिए एपेक संकाय के अलावा, एपेक द्वारा एक / दो भारतीय संकायों की भी व्यवस्था की जा रही है। कोविड–19 माहमारी अवधि के दौरान, जेएनपीटी एंटवर्प पोर्ट ट्रेनिंग एंड कंसल्टेंसी फाउंडेशन ने 2 – 3 ऑनलाइन एपीईसी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की व्यवस्था की थी ।

"समझ के परे..."

हाल ही में उरण में..यशश्री गयी बेमौत मारी....!
उसके प्रेमी दाऊद की... हैवानी करतूत थी सारी.....!!
किस पर रखें भरोसा, कौन किसे अपना आशिक समझे..?
क्या युवाओं को समझाने में हम कम पड़ते हैं सारे.....?

समझ के परे.... समझ के परे...!!

नौ अगस्त को कोलकाता से...आ धमकी ये कुवार्ता....!
पुलिस सहायक ही निकला... बलात्कारी शोषण कर्ता...!!
पुलिस वाला ऐसा हो,
तो रखवाला किसे समझें....!!

आत्मरक्षा प्रशिक्षण का महत्व... क्यों भूल जाते है हम सारे..!!
समझ के परे... समझ के परे..!!

बीस अगस्त को बदलापुर से सूचना सामने आयी.....!
नन्ही स्कूली बच्चियों के... यौन शोषण की काली छायी.....!!
स्कूल में बच्चों को...किसके भरोसे भेजें...?
क्या स्कूल व्यवस्थापन सुरक्षा का भरोसा... दे सकता है बच्चों का, प्यारे..!!

समझ के परे... समझ के परे....!!

तेरह सितम्बर को पूरा पनवेल शहर हो गया हक्का बक्का.....!
माँ का कत्ल करवाने...बेटी ने ही दिया दस लाख का ठेका.....!!
माँ अनुशासन लगायें... इसमें क्या बुराई समझें...?

अगली पीढ़ी पर संस्कार और अंकुशों का संतुलन क्यों नहीं कर पाते हम सारे...!!

समझ के परे... समझ के परे...!!

ये किस दिशा में चल रहे हैं हम...?
कैसी विभत्स विकृति का शिकार हैं हम...?
ऐसी घिनौनी घटनाओं से हम क्या सोचें...?

जीवन में हमारी मंजिल कौन सी? क्या समझें?
न जाने क्या करना है हासिल हमें...? क्या समझें...?

ये सब तो समझ बूझ के हैं परे...!!
ये सब तो समझ बूझ के हैं परे...!!

– श्री संतोष तारे
उप प्रबंधक

मानव जीवन सफल बनाऐंगे

– मधुकर कोली

विज्ञान चाहे कितनी भी प्रगति करे एक प्रश्न तो उठता ही है यह बात सच है कि, आज तक हम मानव को जीवित नहीं कर सकते हैं ? हवा दिखती तो नहीं, फिर भी है, हम खून निर्माण नहीं कर सकते ? इसका अर्थ है, विज्ञान के अलावा कोई तो शक्ति है जो यह सब करवाती है । उसे लोग भिन्न–भिन्न नामों से जानते और मानते हैं ।

मानव जन्म मिला है तो पशु या अन्य प्राणियों से कुछ अलग काम करना चाहिए :–

हमें यह मानव जीवन क्यों प्राप्त हुआ है, इसकी जिज्ञासा होनी चाहिए । हमें इसका पता ही नहीं होता है । इसका एक कारण आध्यात्मिक ज्ञान की कमी या तो मानव जीवन कैसे जीना है इसका ज्ञान नहीं होने के कारण मानव अपना पूरा जीवन आहार, निद्रा, भय, और मैथुन जैसे कर्मों में व्यतीत करता है । उसे यह लगता है कि, येन केन प्रकारेन हमारा जन्म पैसा कमाकर सभी सुख–सुविधा प्राप्ति के लिए ही हुआ है । लेकिन, यह सभी तो पशु (कुत्ता) भी करता है । तो कुत्ते में और मानव में क्या फर्क ? क्योंकि कुत्ता भी यहाँ–वहाँ मुंह मारकर पेट भरता है (आहार), हमारी 25 लाख की गाड़ी के ऊपर बेड समझकर सोता है (निद्रा), उसको भी अन्य प्राणियों का भय होता ही है (भय), कुत्ता भी ये सारे कर्म करता है तो पशु और मानव दोनों में क्या विशेष फर्क है ? यह सोचने वाली बात है । मानव का एक बुद्धिमान प्राणी होने के कारण, अच्छे कर्म करना जरूरी है ।

मानव को जीवन प्राप्ति संबंधी जिज्ञासा प्राप्त करनी चाहिए :–

हमें यह मानव योनि क्यों प्राप्त हुई है ? इसके पीछे क्या तथ्य है यह जिज्ञासा हम नहीं करते हैं । सिर्फ पैसा ही सर्वश्रेष्ठ नहीं बल्कि मानव को जीवन में शांति मिलना बहुत जरूरी है । क्या बड़े पैसे वाला सुखी जीवन जी पाता है ? क्या उसको टेंशन नहीं होता है ? इसके बारे में हम अगर सोचे तो पता चलता है कि सभी दुखी हैं, गरीब से लेकर श्रीमंत (धनी) को भी कुछ न कुछ टेंशन होता ही है । अगर हमें शांतिमय जीवन बिताना है तो हमे भगवान श्रीकृष्ण के भगवदगीता में दिए हुए ज्ञान को समझना होगा और जीवन में लाना होगा ।

मानव जीवन का सच :–

जीवन एक बड़ा खेल है । आजकल के कलियुग में हर एक माँ बाप दिन–रात मेहनत करके घर के सदस्यों के लिए जो कमाता है वह यहीं का यहीं धरा रह जाता है यह सच बात है । बाप खुद के लिए अच्छे कपडे, जूते अन्य वस्तुओं और सुविधाओं के लिए खर्च नहीं करता है, लेकिन अपने बच्चों के लिए जरूर सभी करता है । नब्बे प्रतिशत लोग अपना पूरा जीवन पैसा कमाने में व्यतीत करते हैं । हम जो कमाकर जमा करते हैं, वो हमारे मरने के बाद दूसरा ही खाता है । यही जीवन की सच्चाई है । यह सच है – मरने के बाद अपनी पत्नी घर के दरवाजे तक, समाज समशान तक और पुत्र हमें शमशान में आग्नि देने तक हमारे साथ रहते हैं । कोई कितना ही श्रीमंत (धनी) हो, उसको अलग समशान में नहीं जलाया जाता है, गरीब हो या श्रीमंत हो, सभी को एक ही शमशान में जलाया जाता है । वहाँ श्रीमंत व्यक्ति के लिए अलग सुविधाऐं नहीं होती । जलाने के बाद, साथ कुछ भी नहीं जाता है, बंगला, गाडी पैसा सभी यही पड़ा रहता है । इसलिए कहते हैं कि दुनिया तो एक उलझन हैं कहीं धोखा, कहीं ठोकर । इसलिए हँस हँस के जीना चाहिए ।

मानव जन्म मिला है इसलिए अच्छे कर्म करना जरूरी है :–

1) अपने हैसियत से गरीबों की मदद करना, गरीब बच्चों के विद्यालय का शुल्क भरना, दूसरों के दुःख में साथ देना, अच्छी संगत में रहना, वेदों का ज्ञान हासिल करना और उनकी शिक्षानुसार कर्म करना, अच्छे मित्र जो संकट में साथ दे उनको कभी न भूलना, बुरी आद्तों से बचना, शुद्ध आहार और शुद्ध विचार होने चाहिए, सच्चाई और प्रामाणिकता से जीवन बिताना, अपने पूर्व कर्मों का फल समझकर आने वाले दुखों को काटना, पर भगवान को कभी दोष नहीं देना आदि सारे अच्छे कर्म मानव जीवन प्राप्ति को सफल बनाते हैं ।

2) नेक जीवन बिताने वाले मानव के पास सच्चाई से कमाया हुआ ज्यादा धन तो नहीं होता है पर उसे यह टेंशन भी तो होता नहीं है कि कोई उसे पकड कर जेल में डाल देगा । वह टेंशन मुक्त जिंदगी जी सकता है ।

3) हम जब पैदा होते हैं तो जग हँसता है याने हमारे परिवारजनों को खुशी होती है, लेकिन उस समय हम तो रोते हैं । इसलिए हमें ऐसे अच्छे कर्म करने चाहिए कि हमारे इस दुनिया से जाते समय लोग रोयें और हम हँसे ।

4) एक बात पक्की है कि अगर हम मुफ्त का खाना–पीना बाँटे तो बिन बुलाई भीड़ हमारे यहाँ जमा होगी । सभी सुख में तो साथ देंगे लेकिन दुख में मुंह मोड़ेंगे । हमें मानव होने के कारण सुख में कम लेकिन दुख में दूसरों कों ज्यादा साथ देना चाहिए यह मूल्यवान है ।

5) कहते हैं कि जिंदगी एक किराए का घर है, एक न एक दिन बदलना ही पड़ेगा । जब मौत आवाज देगी तो घर से निकलना ही पडेगा । जब तक सांस है तब तक रिश्ता होता है, सांस रुक जाएगी तब सारे रिश्ते छूट जाएंगे । कोई किसी का नहीं होता, कर्म ही अपना साथ देते हैं और कर्म के सिद्धांतानुसार, जीवन में जो घटता है वो अपने पुराने कर्म के वजह से ही होता है इसको ना कोई ईश्वर या शक्ति बदल सकती है । एक बात जरूर सच है कि ईश्वर की भक्ति करने से बुरे कर्म का आघात थोड़ा कम होता है । हिन्दू धर्म के वेदों के अनुसार, इस कलियुग में भगवान का नाम संकीर्तन करना यही सबसे बड़ी बात है ।

6) कहते हैं कि मुट्ठी बांध के आने वाले, हाथ पसारे जाएगा, आसमान में उडने वाले मिट्टी में मिल जाएगा । तेरा अपना खून ही आखिर तुम्हें अग्नि देगा और तूने जो कमाया है, वो दूसरा ही खाएगा, खाली हाथ आया है खाली हाथ जाएगा । यही दुनिया का सच है लेकिन हम यह बात जब शमशान में होते हैं तभी याद करते हैं बाद में ऐशो आराम की जिंदगी जीने की तमन्ना की वजह से भूल जाते हैं और फिर पशु जैसा व्यवहार करते हैं ।

इसलिए सर्वे सुखिनः भवन्तु , ऐसी सोच रखकर अच्छा कर्म करना ही मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य होना जरूरी है । जिस शक्ति ने या ईश्वर ने हमें मानव बनाया है उसका धन्यवाद करना चाहिए । सभी प्रकार के जाति, धर्म, पंथ भूलकर भगवान को ही सर्वोच्च मानकर, अच्छे कर्म करने से ही मानव जीवन सफल बनेगा ।

****

ज़िंदगी

अकेलेपन का एहसास,
जब न हो कोई आस-पास ।

ज़िंदगी तो कट जाती है हरपल,
ना हो कोई हमदम, ना हो कोई हमराज़ ।।

मिली है ज़िंदगी, तो हंसकर जी लें,
मिले खुशी या गम पी लें ।

न हो कोई हम से नाराज़, ना किसी से हो गिले शिकवे,
ज़िंदगी की राह में हम जैसे और भी तो हैं फूल खिले ।।

ज़िंदगी हर पल है एक कसौटी,
बनी रहती है नोंक-झोंक, कभी खट्टी, कभी मीठी ।।

ज़िंदगी है जन्म-मृत्यु का फासला,
जिओ ऐसे अपना जीवन कर भला तो हो भला ।।

किसी के आने से या जाने से, रुकती नहीं कभी ज़िंदगी,
इसलिए कहावत है ''चलती का नाम ज़िंदगी''

जिओ हरपल ज़िंदादिली से,
न शिकवा हो कभी, पराए अपनों से ।।

घुट-घुटकर जीने से बेहतर है मरना,
पर मिली है ज़िंदगी, तो क्यूं अपने आप को खोना ।।

मत बनाओ ज़िंदगी को इक ज़ंज़ीर,
अपने आप मिट जाएगी, हर एक लकीर ।।

कभी कभी सितम पे सितम ढाती है ज़िंदगी,
तो कभी भिखारी को भी धनवान बनाती है ज़िंदगी ।।

जिओ ज़िंदगी ऐसे, कि ज़िंदगी नाज़ करे तुम पर,
गैरों की भी आंखें हो नम, आपके नहीं रहने पर ।।

न करना कभी अफ़सोस, अपनी ज़िंदगी पर,
एक नेक फैसला था भगवान का, जो तुम्हें भेजा धरती पर ।।

ज़िंदगी है जीने का नाम, हंसी खुशी तू जी ले,
जब भी पूरा होगा ये सफर, हंस के अलविदा कह दे ।।

– श्रीमती स्मिता संतोष शेटये, (परिचारिका)
जनेप प्राधिकरण अस्पताल
कर्मचारी सं. 12303

जवाहरलाल नेहरू पत्तन में हरित ऊर्जा का प्रयोग

विनय बहादुर मल्ल
प्रबंधक (राजभाषा)

प्रत्येक जिम्मेदार औद्योगिक प्रतिष्ठान के लिये अपना कार्बन फुटप्रिन्ट कम करना, पहली प्राथमिकता हो गयी है । 9हरित सागर' परियोजना में भारत सरकार ने समुद्री यातायात और पत्तनों के क्षेत्र में भी हरित ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिये लक्ष्य निर्धारित किये हैं । हरित ऊर्जा का अधिकतम प्रयोग करने के उद्देश्य प्राप्त करने के लिये, जवाहरलाल नेहरू पत्तन ने कई प्रशंसनीय प्रयास किये हैं ।

बड़े-बड़े जलयानों को तटीय घाट तक लाने के लिए परम्परागत रूप से डीजल इन्जन से चलने वाली टग नौकाओं का प्रयोग होता है । अब इनके स्थान पर विद्युत टग नौकाओं के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जा रहा है । साथ ही साथ जलयानों से सामान उतारने / चढ़ाने के लिए जिन डीज़ल क्रेनों को उपयोग किया जाता था, अब उनके स्थान पर विद्युत चालित क्रेनों का प्रयोग बढाया जा रहा है । जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण, नवी मुम्बई में अगले कुछ वर्षों में, सभी क्रेनें विद्युत चालित हो जाऐंगी ।

विद्युत चालित ट्रकों का शुभारम्भ रूपी पूजन करते हुए जनेप प्राधिकरण (JNPA) के अध्यक्ष श्री उन्मेष शरद वाघ

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि लगभग 5000 ट्रक, जनेप प्राधिकरण में रोज़मर्रा के विविध कार्यों के लिए चलते रहते हैं । इन ट्रकों को भी [illegible] से चलाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है । साथ ही साथ विद्युत चालित ट्रकों के परिचालन की योजना भी चल रही है । पत्तन के अन्दर चलने वाले छोटे वाहन तथा कारों में भी परम्परागत ईंधन से चलने वाले वाहनों के प्रयोग को कम किया जा रहा है । विद्युत चालित कारों के प्रयोग को भी बढावा दिया जा रहा है । वर्तमान में, 10 से भी अधिक विद्युत चालित कारें पत्तन क्षेत्र में संचालित होती हैं ।

जनेप प्राधिकरण के वाहन चार्जिंग स्टेशन का प्रयोग करती हुई विद्युत चालित कार

हरित ऊर्जा का उद्योगों तथा वाहनों में प्रयोग हमारे वायुमंडल को स्वच्छ रखने में अति आवश्यक है । आधुनिक काल में जहरीला वायु प्रदूषण लगभग सभी शहरों में एक विकराल समस्या बन चुका है । विद्युत चालित वाहनों का प्रयोग, वायु प्रदूषण की समस्या रोकने में एक मील का पत्थर साबित होगा ।

पत्तन कैन्टीन की छत पर संस्थापित सौर (सोलर) पैनल

पत्तन की अधिकांश इमारतों के ऊपर सौर (सोलर) पैनल लगाये गये हैं ताकि अधिक से अधिक हरित ऊर्जा उत्पन्न की जा सके । वर्तमान में, 4.10 मेगावाट विद्युत उत्पादन क्षमता के सौर पैनल, पत्तन क्षेत्र में संस्थापित हो चुके हैं । इसके अलावा, विद्युत वितरण कंपनी के साथ किये गये समझौतो के माध्यम से भी, अन्य स्थानों पर सौर ऊर्जा से उत्पन्न विद्युत प्राप्त की जाती है, जोकि काफी सस्ती होती है, लेकिन यह केवल दिन में उपलब्ध होती है । पत्तन की कुल विद्युत ऊर्जा आवश्यकता औसतन 15 मेगावाट ही रहती है । अत: यह स्पष्ट हो जाता है कि जवाहरलाल नेहरू पत्तन की विद्युत ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति होने में, हरित ऊर्जा का व्यापक उपयोग होता है ।

साथ ही साथ, पत्तन के नगरक्षेत्र (टाउनशिप) तथा पूरे परिसर में जैविक कचरे का उचित प्रबंधन किया जाता है तथा सीवेज वाटर ट्रीटमेन्ट प्लांट से गंदे पानी को उपचारित करके, बगीचे के पौधों में डाला जाता है । इस प्रकार दूषित जल का भी समुचित प्रबंधन किया जाता है । यदि जनेप प्राधिकरण का एक विस्तृत विश्लेषण किया जाये तो हम पायेंगे कि प्रत्येक वर्ष परम्परागत ईंधन की खपत में कमी आई है और वायु गुणवत्ता में प्रशसंनीय सुधार भी हुआ है । आधुनिकीकरण के साथ साथ हरित ऊर्जा का संवर्धन प्रकृति और जन-मानस की सुख-समृद्धि से जुड़ा है । जनेप प्राधिकरण (JNPA) का लक्ष्य है कि आगामी वर्षों में पत्तन में सिर्फ हरित ऊर्जा का प्रयोग हो और वायु प्रदूषण न्यूनतम हो ।

हमारे देश का सबसे बड़ा पत्तन वाढ़वण, जिला पालघर, महाराष्ट्र में विकसित किया जा रहा है । यह पत्तन हरित ऊर्जा से ही प्रचालित होगा । वाढवण पत्तन में दुनिया के शीर्ष 10 कंटेनर पत्तनों में शामिल होने की क्षमता है । यह भारत से बाहर प्रहस्तित होने वाले यानांतरण कार्गो में कमी लाएगा, जो वर्तमान में लगभग 75% है । इससे परिवहन लागत कम होगी । वैश्विकरण और उदारीकरण के वर्तमान परिदृश्य में, राष्ट्र की प्रगति के सतत प्रयास अति आवश्यक हैं । आर्थिक प्रगति को मानवीय विकास से जोड़ते हुए, प्रत्येक राष्ट्र अपने यहाँ आधारभूत ढाँचे को सुदृढ़ करने में प्रयास रत है । वैश्विक व्यापार के संवर्धन में प्रत्येक देश में विद्यमान पत्तनों की भूमिका का उल्लेखनीय योगदान है, किंतु जैसे-जैसे वैश्विक व्यापार बढ़ रहा है; उसी के साथ हमारे पत्तनों में आधारभूत ढाँचे का विकास भी अंतरराष्ट्रीय स्तर की तकनीक के साथ हरित ऊर्जा का प्रयोग करते हुए आवश्यक है ।

आधुनिक युग में, पूरे विश्व में प्रत्येक क्षेत्र में हरित ऊर्जा को अपनाने पर बल दिया जा रहा है । चाहे हमारी घरेलू ऊर्जा आवश्यकताऐं हो या व्यवसायिक, प्रत्येक क्षेत्र में हरित ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है । हम सभी यह जानते हैं कि भारत अपने पैट्रोलियम उत्पादों की आवश्यकता पूरी करने के लिए विदेशी आपूर्ति पर निर्भर रहता है । विदेशों से पैट्रोलियम आयात करने में, विदेशी मुद्रा व्यय होती है तथा हमारे देश की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल असर पड़ता है । अतः अप्रत्यक्ष रूप से हरित ऊर्जा का अधिकाधिक प्रयोग राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के लिये भी हितकर है । एक समय था, जब रेलवे मुख्यतः डीज़ल इन्जनों के सहारे चलती थी । लेकिन उससे अत्यधिक वायु प्रदूषण होता था । सही दिशा में सतत प्रयासों के फलस्वरूप, आज हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि भारतीय रेलवे में ब्रॉड गेज नेटवर्क का 96.73% विद्युतीकरण किया जा चुका है । भारतीय रेलवे का ऊर्जा के क्षेत्र में यह रूपान्तरण, हमसे से अधिकांश लोगों ने प्रत्यक्ष रूप से देखा है । भारत सरकार की 'हरित सागर' परियोजना के अनुसार, इसी तरह का रूपान्तरण शीघ्र ही पत्तन क्षेत्र में भी होगा ।

धन्यवाद ! जय हिन्द

''मैं समय हूँ''

'मै समय हूँ' चाहकर भी रुक नहीं पाता कहीं
बढता रहता हूँ निरंतर, कभी अटक जाता हूँ कहीं ।

आज फिर से छू लिया जब नारी को हैवान ने
छटपटाती द्रौपदी आयी नजर के सामने
जैसे वो भयभीत कल थी, आज भी ये भयभीत है
दॉव लगी नारी सदा, सदियों से चली रीत है ।
युगों-युगों से जब भी दिखी द्रौपदी लुटती हुई
बढ़ते हुए तब-तब मैं अटक गया हूँ वहीं ।

घर से वो निकली थी अल्हड़ सी अपनी ताल में
फॉस लिया भेडयिों ने उसको अपने जाल में ।
खींच कर दामन, निर्वस्त्र कर दिया राह में
हर किसी की चाह थी कि भींचे उसको बाँह में ।
वासना की आग चहुँ ओर थी भड़की हुयी,
जल रही थी आत्मा और लाश उसकी चल रही ।

खींच कर जब केशों से द्रौपदी लायी गयी
कायरों की भांति थीं सबकी नजरें झुक गयी ।
भीष्म से, धृतराष्ट्र से वो याचना करती रही,
हर तरफ से मौनता की लहर उठती रही ।
सत्ता के प्रमोद में दुर्योधन तब चूर था
ध्वस्त हुआ क्षण में, पाँच पतियों का गुरूर था ।

आबरु है नारी की या जंग का हथियार है ?
हैवानियत पे इनकी वसुंधरा शर्मसार है
जब भी दिखे कोई भेड़िया जो छुपा हो घात में
काटें उसकी बाहें नारी एक ही आघात में ।
अगर जुटा के साहस वो कर गयी ऐसा कभी
सोचता हूँ उसी क्षण में अटक जाऊं मैं वहीं ।

'मै समय हूँ' चाहकर भी रुक नहीं पाता कहीं
बढता रहता हूँ निरंतर, कभी अटक जाता हूँ कहीं ।

– श्रीमती भारती ठाकुर

सांस्कृतिक कार्यक्रम

--श्रीमती बेला मनोज आगलावे
सचिव-सांस्कृतिक(जनेप खेल परिषद)

सांस्कृतिक समारोह मानव संस्कृति का सार है, जो परंपरा, समुदाय और महत्व के साथ प्रतिनिधित्व होते हैं । सांस्कृतिक कार्यक्रम मुख्य रूप से कला, संस्कृति या मूल्यों से संबंधित होते हैं । सांस्कृतिक विषयों को फैलाने और विकसित करने में इनका महत्वपूर्ण स्थान है । सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिए, विभिन्न संस्कृतियों के रीति-रिवाजों, कला, संगीत, नृत्य इत्यादि के बारे में जानकारी मिलती है । सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिए समृद्धि, विविधता और सामाजिक समरसता की बातें सीखने को मिलती हैं। इससे बहुत से लोगों के लिए अपनेपन की भावना पैदा होती है।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का महत्व अत्यधिक होता है क्योंकि ये हमारी संस्कृति, गरिमा और एकता को प्रकट करने का साधन होते हैं। ये कार्यक्रम हमें अपनी भूमिका के प्रति जागरूक करते हैं और समाज में सद्भावना को बढावा देते हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से हम समृद्धि, विविधता और सामाजिक समरसता की महत्वपूर्ण बातों को सीखते हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, हमारे समाज के सभी वर्गों को जोड़ने का माध्यम बनता है और हमारी विविधता में एकता को स्थापित करता है। ये कार्यक्रम हमें सामाजिक जागरूकता और सहयोग की भावना दिलाते हैं जो एक साक्षर समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण होते हैं।

23वीं अखिल भारतीय महापत्तन प्राधिकरण सांस्कृतिक समारोह प्रतियोगिता का, 7 दिसंबर 2023 से 10 दिसंबर 2023 तक, पारादीप पत्तन प्राधिकरण में किया गया था। इसमें भारत के कुल 10 महापत्तन, सहभागी हुए थे। श्रीमती मनीषा जाधव, महाप्रबंधक (प्रशासन) एवं सचिव, जनेप, तथा अध्यक्ष (जनेप खेल परिषद) के सहयोग एवं मार्गदर्शन से जनेप की टीम पूरी तैयारी के साथ प्रतियोगिता में शामिल हुई और प्रतियोगिता में जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण ने "प्रथम स्थान'' प्राप्त कर चैंपियनशिप ट्रॉफी पर अपनी मुहर लगाई। वहीं दूसरे स्थान पर डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी पत्तन तथा तीसरे स्थान पर मुंबई पत्तन प्राधिकरण रहे।

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण की टीम लीडर श्रीमती बेला आगलावे (सचिव–सांस्कृतिक, जनेप खेल परिषद) थी। जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण की एकांकीका "SOS" सही मायनों में अव्वल रही। श्री. नितिन पाटील द्वारा निर्देशित एकांकीका 'SOS' ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। एकांकीका में श्री. संतोष तारे, श्री. चंद्रशेखर जेउरगी, श्री. दीपक मयेकर, श्री. संतोष परब, श्री.मनोहर गुजेला, श्रीमती पुष्पलता धनावडे, श्रीमती सुषमा म्हात्रे, सुश्री. उज्ज्वला निकलजे और श्रीमती बेला आगलवे थे। श्रीमती पुष्पलता धनावडे को 'सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री' का पुरस्कार प्राप्त हुआ । 'वाद्य संगीत' की शृंखला में 'तबला वादन' में कु. आदित्य उपाध्ये ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा श्री प्रमोद पवार ने 'शास्त्रीय संगीत' में 'तृतीय स्थान' प्राप्त किया।

'सुगम संगीत' की शृंखला में 'श्री. प्रमोद पवार' ने अपना सुंदर गीत प्रस्तुत किया। 'श्री. महेश तांडेल' और 'श्री किशोर तांडेल' ने पूरे कार्यक्रम के दौरान 'प्रकाश योजना, ध्वनि और संगीत प्रणाली' का बेहतरीन प्रदर्शन प्रस्तुत किया।

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण के कर्मचारियों द्वारा किए गए 'सामूहिक नृत्य' की शृंखला में 'आदिवासी सामूहिक नृत्य' को दर्शकों और परीक्षकों द्वारा काफी सराहा गया । सामूहिक नृत्य में श्रीमती जयश्री पाठारे, श्रीमती सुषमा म्हात्रे, श्रीमती पुष्पलता धनावडे, श्रीमती स्मिता शेटये, श्रीमती सुचिता माली, सुश्री उज्वला निकालजे, श्रीमती बेला आगलवे, श्री. संतोष तारे, श्री. चंद्रशेखर जेउरगी, श्री. दीपक मयेकर, श्री. संतोष परब, श्री.मनोहर गुजेला, श्री. प्रमोद पवार और श्री. महेश तांडेल ने भाग लिया।

चले आओ न तुम .....

– नीलम केलकर
मेट्रन, जनेप प्राधिकरण अस्पताल
कर्मचारी सं. 11978

दूर कहीं पेड़ों के झुरमुट से, मुझे निहार रहा है कोई.....
बेताब – सी आंखें मेरी, हरदम खोज रहीं हैं.... उसे ही.....
कब आओगे सामने, अपनी सलोनी–सी काया लिए .....
मेरी ताकती आँखों को सुकून देने, चले आओ, शीघ्र चले आओ, चले आओ न तुम....

बरसों से हैं तरसी आँखें, ताकते–ताकते तरसी आंखें.....
तृप्त करा दो, तरस दिखा दो.....
ओ..... सलोनी काया वाले.....अपना सुंदर मुखड़ा दिखला दो.....
कब आओगे सामने, अपनी सलोनी–सी काया लिए.....
मेरी ताकती आँखों को सुकून देने, चले आओ, शीघ्र चले आओ, चले आओ न तुम.....

नयन भर कर देख लूँ, सुन्दर मुखड़ा चूम लूँ...
मेरी आँखों को ठंडक मिले, बेचैन दिल को करार मिल जाए.....
घर भर जाए तुम्हारी मोहक किलकारी से .....
खनक उठे कोना–कोना, और सारा घर–आंगन.....
यही दुआ है ईश्वर से, सदा भरा रहे मेरा दामन.....
कब आओगे सामने, अपनी सलोनी–सी काया लिए .....
मेरी ताकती आँखों को सुकून देने, चले आओ, शीघ्र चले आओ, चले आओ न तुम.....

दूर कहीं पेड़ों के झुरमुट से, मुझे निहार रहा है कोई.....
बेताब–सी आँखे मेरी, हरदम खोज रहीं हैं..... उसे ही.....
कब आओगे सामने, अपनी सलोनी–सी काया लिए .....
मेरी ताकती आँखों को सुकून देने, चले आओ, शीघ्र चले आओ, चले आओ न तुम.....

शब्दकोश / VOCABULARY

पत्तन, पोत परिवहन के संदर्भ में (IN CONTEXT OF PORT & SHIPPING)

अधोलिखित शब्द हमारे पत्तन के विविध कार्यों में प्रयोग होते हैं। हमें आशा है कि यह शब्दकोश अन्य पत्तनों के लिए भी सहायक होगा तथा राजभाषा के अधिकाधिक प्रयोग को साकार करने में सहायक होगा। पत्तन में दैनिक प्रयोग होने वाले अंग्रेजी के शब्दों के स्थान पर राजभाषा में अनूदित इन शब्दों के प्रयोग से हमारे श्रमिकों और अधिकारियों के बीच न केवल प्रभावी सम्प्रेषण होगा बल्कि हमारी राजभाषा भी सम्मानित होगी।

Ministry of port, shipping and waterways = पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय

Pre berthing delay = घाटायन पूर्व विलम्ब

Voluntary Retirement Scheme = स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजना

Floating craft = प्लवन यान

All weather tidal port = बारहमासी ज्वारीय पत्तन

Handle = प्रहस्तन

Harbour = बन्दरगाह

Dock = गोदी

Port craft = पत्तन नौका

Tide = ज्वार

Marine = समुद्री

Light house = दीप स्तम्भ

Loading = लदाई

Discharge = उतराई

Manoeuvring area = घूमने का क्षेत्र

Dredge = निकर्षण करना

Special Economic Zone = विशेष आर्थिक क्षेत्र

MoU (Memorandum of Understanding)= समझौता ज्ञापन

Operation = प्रचालन

Draft (in context of ship sailing) = गहराई

Major port = महा पत्तन

Coastal berth = तटीय घाट

Overhaul = जीर्णोद्धार करना
Coastal Shipping = तटीय नौवहन

Shallow= उथला

Jetty= घाट

Vessel = जलयान

Delegation of powers = शक्तियों का प्रत्यायोजन

On lease = पट्टे पर

Invoice= बीजक

Shore = तट

Nautical miles = समुद्री मील

Reimbursement = प्रतिपूर्ति

Follow up action = अनुवर्ती कार्यवाही

Corporate Social Responsibility = निगमित सामाजिक दायित्व

License=अनुज्ञप्ति

Navigation = नौवहन / नौचालन

Mounted = आरूढ़

Preventive Maintenance = निवारात्मक अनुरक्षण

Preventive Vigilance = निवारात्मक सतर्कता

Advance = अग्रिम

Estate= सम्पदा

Disburse = वितरीत करना

Equipment = उपस्कर

Integration = समेकन

Installation = संस्थापना

Logistics = परिभारिकी

Bow = जहाज का अगला हिस्सा

Stern = जहाज का पिछला हिस्सा

Adjustment = समायोजन

Miscellaneous = विविध

Provisional = अस्थायी

Honorarium = मानदेय

Recommendation = संस्तुति

Lump sum amount = एक मुश्त राशि

Ex post facto sanction = कार्योत्तर मंजूरी

Provident Fund = भविष्य निधि

Gratuity = उपदान

Interim = अन्तरिम

Oil spill = तेल छलकाव

Quay line = घाट

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण (जेएनपीए)

कितने निकले घर से बेबस, बेसहारा, मजबूर,
सबको संभाला इसने, हर एक को दे के भरपूर ।

जमीन से ले के पानी तक, फैला हुआ है कारोबार,
माल पहुंचाती जगह-जगह, बढाती है देश का व्यापार ।

तरह तरह के लोग इसमें, कर्मचारी-अधिकारी सब शामिल,
ऊंचाई तक ले गए इसे, जे एन पी ए है सबसे काबिल ।

35 साल का तजुर्बा है,
हर रोज एक अजूबा है,
ऊंचे स्तर पर ले जाना है,
नए विक्रम पर नाम लगाना है ।

शेवा गाँव में हुआ है विस्तार,
है कई लोगों के जीवन का आधार,
नए साल में लिया है संकल्प,
ग्रीन पोर्ट का सपना होगा साकार ।

रस्ते, पुल, इमारतें सब कुछ समाये इसमें,
24X7 चलती है यह, रोक नहीं है कोई जिसमें ।

प्रगति के पथ पर चल पड़ी,
कई मुश्किलों से लड़ पड़ी,
लाजवाब है इसकी खासियत,
सबको संभाले हर घड़ी, हर घड़ी ।

कितना भी कहूँ फिर भी, मन नहीं भर पाता,
यह है लाखों की अन्नदाता, यह है लाखों की अन्नदाता ।

प्रतिक यामिनी भोईर
कर्मचारी क्र. 12404

भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष

डेनमार्क, फिनलैण्ड, स्विटजरलैण्ड, सिंगापुर, इंग्लैण्ड, अमेरिका जैसे देशों के बारे में सोचते ही समृद्ध देशों की छवि हमारे सामने प्रस्तुत हो जाती है । लेकिन पाकिस्तान, भारत, बांग्लादेश, अफ्रीका महाद्वीप के अधिकांश देशों के बारे में सोचने पर हमारे सामने गरीबी और भ्रष्टाचार के हृदय विदारक दृश्य और आंकड़े प्रस्तुत हो जाते हैं । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी भी देश या समाज में भ्रष्ट व्यवस्था के कारण गरीबी स्वतः जन्म ले लेती है । यदि हमारी कार्य प्रणाली में सत्यनिष्ठा और पारदर्शिता के साथ तर्कसंगत नियम उपलब्ध हों, तो निश्चय ही सत्यनिष्ठा की संस्कृति अपनाकर हम अपने राष्ट्र की समृद्धि को साकार कर सकते हैं ।

सत्यनिष्ठा के व्यापक अर्थ होते हैं और उसका समाज पर पड़ने वाला असर भी व्यापक होता है । भारत सरकार द्वारा सत्यनिष्ठा की संस्कृति को बढ़ाने के लिए अनेक प्रयास निरन्तर किये जा रहे हैं, जैसे कि – सूचना का अधिकार अधिनियम– 2005, PIDPI, CPGRAM, सभी सरकारी विभागों तथा कार्यालयों में सतर्कता विभाग की अनिवार्यतः स्थापना आदि । सूचना का अधिकार अधिनियम, भ्रष्टाचार के विरुद्ध जन मानस की लड़ाई में मील का पत्थर साबित हुआ है । भ्रष्टाचार के अनेक प्रकरण RTI के कारण ही उजागर हो पाये हैं । सत्यनिष्ठा की संस्कृति को बलपूर्वक आगे बढ़ाने में, PIDPI (Public Interest Disclosure and Protection of Informer) ने भी सराहनीय योगदान दिया है । PIDPI के अन्तर्गत, हम सन्देहास्पद और भ्रष्ट मामलों की शिकायत करते हुए, भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष को चरमोत्कर्ष पर ले जा सकते हैं । इस तरह की शिकायतों में हमें आवश्यक तथ्यों एवं विश्वसनीय आंकड़ों के साथ ही, मामलों को ऊपर ले जाना चाहिए ताकि जरूरी कार्यवाही आसानी से की जा सके । CPGRAM पर शिकायत भेजकर भी, कई मामले सुलझाये जा सकते हैं ।

सतर्कता विभाग की हर कार्यालय में स्थापना, इसी उदेश्य के साथ की गई है कि जो शिकायतें प्राप्त हुई हैं उन पर जमीनी स्तर पर खोज बीन की जा सके तथा आवश्यक जानकारी इकट्ठी की जा सके । कुछ शिकायतें कार्य प्रणाली पर प्रश्न चिन्ह उठाती हैं । इस प्रकार की शिकायतें न केवल उस शिकायत का समाधान दिखाती हैं, बल्कि भविष्य में इस प्रकार की शिकायतों की सम्भावना दूर कर देती हैं । क्योंकि अगर हमारी कार्य प्रणाली, नियम सही है तो सभी को अच्छी सेवा मिलेगी । सतर्कता विभाग सभी कार्यालयों में निष्पक्षता एवं इमानदारी के अनुपालन के साथ कार्य निष्पादन पर ध्यान देता है ।

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण में सतर्कता जागरुकता सप्ताह का आयोजन

Single Window Clearance (एकल खिड़की अनुमति), आवश्यक सूचनाओं का वेबसाइट पर उपलब्ध होना, बड़ी खरीदों में टेन्डरिंग प्रक्रिया का अनुपालन होना आदि हमारी उत्कृष्ट कार्य प्रणाली को दर्शाते हैं । सत्यनिष्ठा से न केवल समृद्धि आती है बल्कि देश और समाज का सर्वांगीण विकास भी होता है । सत्यनिष्ठा की भावना को बढ़ाकर, हम अपने उद्यमियों एवं व्यवसायों में सकारात्मक स्पर्धा का वातावरण तैयार कर सकते हैं । श्रेष्ठ उत्पाद या सेवा का चयन, पूरी तरह से उत्पाद या सेवा की विशिष्टताओं पर होना चाहिये, न कि किसी अनुचित आर्थिक प्रलोभन पर । यदि हमारे देश में सड़क, पुल, इमारतों का निर्माण गुणवत्तों के मानकों के अनुरूप हों, तो निश्चय ही हमारी आधारभूत अवसंरचनाऐं (infrastructure) वैश्विक स्तर की होंगी और साथ ही राष्ट्र विकास में प्रशंसनीय योगदान भी करेंगी । इस कारणवश राष्ट्र की आर्थिक प्रगति भी सम्भव होगी । सम्पन्नता और समृद्धि का द्योतक बनने से पहले हमें सत्यनिष्ठा को अपनाना होगा ।

हम अपने दैनिक जीवन में भी उसी दुकानदार से सामान खरीदना पसंद करते हैं, जो सत्यनिष्ठा के साथ अपना व्यापार करता है । भ्रष्ट और बेइमान लोगों को सामाजिक स्तर पर भी तिरस्कार का सामना करना पड़ता है । सत्यनिष्ठा के साथ कार्यरत हमारे नौकरी पेशा नागरिक एवं व्यवसायी, दोनों ही सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते जाऐंगे । आज हमारे देश के अनेकों व्यवसायी, वैश्विक स्तर पर सत्यनिष्ठा के साथ व्यापार करते हैं और देश के लिए आर्थिक प्रगति का मार्ग सुनिश्चित करते हैं । अनेकों निर्यातक देश का सामान विदेशों तक भेजते हैं । यह उनके सत्यनिष्ठापूर्वक परिश्रम का ही नतीजा है कि उनके कारण अनेक युवाओं को रोजगार मिलता है तथा उनके परिवारों में सुख, समृद्धि और सम्पन्नता आती है ।

अन्त में, मैं यही कहना चाहूँगा कि भ्रष्टाचारी मार्ग हमें कम समय में कुछ धनराशि तो दे सकता है, मगर आपके विनाश को आमंत्रण भी दे रहा है । हमारे सुख, चैन और सम्मान के लिए यही सर्वश्रेष्ठ है कि जो भी कमायें, सत्यनिष्ठा के सिद्धान्तों के अनुरूप ही कमायें और राष्ट्र की समृद्धि और सम्पन्नता में अपना योगदान दें ।

स्वप्निल पोकुलवार
प्रबंधक

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण की 35 वीं वर्षगाँठ समारोह का आयोजन

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री उन्मेष शरद वाघ द्वारा महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल श्री रमेश बैस जी को स्मृति चिन्ह दिया गया।

(बायीं तरफ से) जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री उन्मेष शरद वाघ, मुम्बई पत्तन प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री राजीव जलोटा, महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल श्री रमेश बैस, महाराष्ट्र सरकार के अपर मुख्य सचिव (यातायात एवं पत्तन) और हमारे पूर्व अध्यक्ष श्री संजय सेठी तथा मुख्य पोस्टमास्टर जनरल श्री किशन कुमार शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति ।

हमारे पत्तन की उल्लेखनीय गतिविधियाँ

हिन्दी शिक्षण योजना का सर्वोच्च पाठ्यक्रम 'पारंगत' है । अधिक शिक्षार्थी सुनिश्चित करने के लिये कक्षा का हमारे पत्तन में ही आयोजन हुआ । परीक्षा 12 जून, 2024 को सफलतापूर्वक संपन्न हुई । जिसके परिणामस्वरुप वर्तमान में हमारे पत्तन में 08 अधिकारीयों एवं 26 कर्मचारियों ने पारंगत शिक्षा उच्च प्राप्तांकों से उत्तीर्ण की । इस पाठ्यक्रम का अगला बैच भी शीघ्र ही प्रारम्भ होने वाला है ।

मराठी भाषा दिवस एवम् संबन्धित प्रतियोगिताओं का आयोजन

योग दिवस का आयोजन